

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24

सितम्बर - I - 2022



अंक - 11

माउण्ट आबू

Rs.-10



नई दिल्ली। राष्ट्रपति भवन में भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर उन्हें रक्षासूत्र बांधते हुए ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी। इस मौके पर संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई भी उपस्थित रहे।

सम्मेलन: ब्रह्माकुमारीज के शिपिंग, टूरिज्म विंग के त्रिदिवसीय सम्मेलन का सफल आयोजन

यहां से दुनिया को एक नया मार्ग दिखाया जा रहा है : श्रीपद नाइक

शांतिवन-आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में 'दया एवं करुणा से आध्यात्मिक सशक्तिकरण' विषय के

मार्ग पर ले जाने का कार्य ब्रह्माकुमारी संस्था कर रही है। यहां से दुनिया को एक नया मार्ग दिखाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज जो संस्कार

कुटुम्बकम वाली महान संस्कृति रही है। आज भले इसमें परिवर्तन आ गया है, लेकिन अब फिर से परमात्मा पुनः देवी संस्कृति की स्थापना कर रहे हैं।



अंतर्गत आयोजित शिपिंग एविप्रेशन टूरिज्म विंग के राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान केंद्रीय पर्यटन राज्यमंत्री श्रीपद

स्वयं पर स्वयं दया और कृपा करें: ब्र.कु. डॉ. निर्मला

शिपिंग, एविप्रेशन एवं टूरिज्म विंग की अध्यक्ष डॉ. ब्र.कु. निर्मला दीदी ने कहा कि दुनिया में सभी चाहते हैं कि हमारे संपर्क में जो भी आए वह हमें दया और करुणा से देखें। स्वयं को स्वयं पर दया और कृपा करनी है। हेल्थ के लिए जैसे एक्ससाइज जरूरी है, वैसे ही आंतरिक खुशी के लिए मेडिटेशन बहुत जरूरी है।

येस्सो नाइक ने शिरकत की। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि परमात्मा को याद करके, योगी बनके जीवन को अंतिम मार्ग, मोक्ष

हमारी नई पीढ़ी में, बच्चों में आना चाहिए वह नहीं आ रहे हैं। क्योंकि हम उन्हें संस्कार तो देना चाहते हैं लेकिन वैसा व्यवहार हम खुद नहीं करते हैं। राज्यमंत्री नाइक ने कहा कि सम्पूर्ण विश्व में भारत अपनी सभ्यता और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। इसी से प्रभावित होकर दुनियाभर से लाखों लोग हर वर्ष यहां आते हैं। इसलिए टूरिज्म मंत्रालय का प्रयास है कि जो भी टूरिस्ट विदेश से आते हैं वह यहां की अच्छी छवि लेकर जाएं। इसके लिए हम सभी को उनके साथ अच्छा व्यवहार करना होगा। भारत की संस्कृति को फिर से स्थापित करने का कार्य ब्रह्माकुमारीज संस्था कर रही है। विंग की उपाध्यक्ष ब्र.कु. मीरा बहन ने कहा कि हमारे भारत देश की संस्कृति बहुत उच्च है। भारत की अहिंसा एवं वसुधैव

विंग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. कमलेश बहन ने विंग की सेवाओं की जानकारी देते हुए कहा कि विंग द्वारा

ब्र.कु. सतीश का केंद्रीय राज्यमंत्री ने किया सम्मान

कार्यक्रम के दौरान राज्यमंत्री नाइक ने मधुर वाणी ग्रुप के अब तक 6 हजार से अधिक गीत लिख चुके ब्र.कु. सतीश भाई का शॉल ओढ़ाकर और मोमेंटो प्रदान कर सम्मान किया। इस मौके पर संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय एवं विंग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. संतोष ने भी विचार रखे।

चल रहे मेरा देश मेरी शान प्रोजेक्ट का उद्देश्य भारतीय संस्कृति की प्राचीन परंपरा से लोगों को अवगत कराना है। संचालन ब्र.कु. संगीता बहन ने किया।



जीवन वही श्रेष्ठ है जो प्रभु के नाम समर्पित हो जाये

हर्षोल्लास से हुआ पॉजिटिव हेल्थ केयर सेंटर का उद्घाटन व 15 ब्रह्माकुमारी बहनों का समर्पण

पानीपत-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज के थिराना रोड स्थित ज्ञान मानसरोवर रिट्रीट सेंटर के दादी चंद्रमणि यूनिवर्सल पीस ऑडिटोरियम में दादी जानकी पॉजिटिव हेल्थ केयर सेंटर का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर पानीपत सर्कल की 15 ब्रह्माकुमारी बहनों का समर्पण समारोह भी मनाया गया। समर्पण समारोह में 3500 से अधिक लोगों ने भाग लिया। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि जीवन वही श्रेष्ठ है जो प्रभु के नाम समर्पित हो जाये। विश्व कल्याण के लिए इन कन्याओं ने जो अपना सर्वस्व आज समर्पित किया है इससे महान कार्य और कुछ भी नहीं हो सकता। उन्होंने समर्पित होने वाली बहनों

दे रही है। राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम लता बहन, निदेशिका, पंजाब जोन ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बहुत धन्य हैं ऐसे माता-पिता जो अपनी बेटियों को प्रभु को अर्पण कर रहे हैं और ऐसे अलौकिक दृश्य को अपनी आँखों से देख रहे हैं। ज्ञान मानसरोवर निदेशक ब्र.कु. भारत भूषण भाई ने कहा कि मुझे खुशी होती है ये देखकर कि आज के मॉडर्न युग में भी ये बहनें दुनिया की चकाचौंध को छोड़ आध्यात्मिकता में अपनी रुचि रखे हुए हैं। संस्थान की सर्कल ईचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी ने सभी मेहमानों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि अगर हम अपने समय व शक्ति को मानव की भलाई के कार्य में लगाएं तो हमारा जीवन आनंद से भरपूर हो सकता



को शुभ राय देते हुए कहा कि जीवन भर ट्रस्टी होकर रहना है। बुद्धि में यही रहे कि हमारा कुछ भी नहीं, सब उस परमात्मा पिता का है। राज्य सभा सांसद कृष्ण लाल पंवार ने कहा कि अपने लिए तो सभी जीते हैं लेकिन इन बहनों ने मानव समाज के कल्याण हेतु आज जो अपना जीवन समर्पित किया है यह अति सराहनीय कार्य है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था एक विश्व व्यापी संस्था है जो शांति स्थापना के कार्य में बहुत महत्वपूर्ण योगदान

है। मौके पर ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, पठानकोट द्वारा प्रस्तुत मधुर गीतों ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। मंच संचालन ब्र.कु. विवेक, माउण्ट आबू तथा कुमारी शिवि ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। समर्पित होने वाली बहनों ने पूरी सभा के बीच ब्रह्माकुमारीज की धारणाओं को जीवन में अपनाने की प्रतिज्ञा की। साथ ही उनके माता-पिता ने खुद अपनी कन्या का हाथ संस्थान की अति.मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी के हाथों में सौंप दिया।

समर्पित होने वाली बहनों के नाम व स्थान

ब्र.कु. पूनम, दत्ता कॉलोनी, ब्र.कु. ममता, समालखा, ब्र.कु. सुनीता, मतलौडा, ब्र.कु. मंजू, सुखदेव नगर, एल्लिको, ब्र.कु. परवीन, अंसल सिटी, ब्र.कु. सुषमा, मॉडल टाउन, ब्र.कु. मोनिका, सोनीपत, ब्र.कु. दिल्या, बापौली, ब्र.कु. सोनिया, ज्ञान मानसरोवर, ब्र.कु. छवि, बिहोली, ब्र.कु. माफी, कंडेला, ब्र.कु. रजनी, मॉडल टाउन, ब्र.कु. गीता, भीलवाड़ा, ब्र.कु. नीतू, सिवाह तथा ब्र.कु. मंजीत, फ्रीना, बिजनौर।

सुबह की शुरुआत छः संकल्पों के साथ

कहते हैं, सुबह की शुरुआत अच्छी तो शाम भी अच्छी। सुबह आँख खुलते ही पहले के जो क्षण हैं उनका हमारे पूरे दिन के लिए बहुत महत्वपूर्ण स्थान हैं। जो उन क्षणों को बहुत शक्तिशाली संकल्पों के साथ व्यतीत करते हैं, वो सारे दिन में, हर परिस्थिति में, हर चुनौती में विजयी होकर ही रहते हैं। चुनौतियों को अवसर में बदलने के लिए शुरुआत के अमूल्य पलों को हमें शक्तिशाली बनाना ही होगा। अन्यथा मिले हुए सारे दिन के समय को हम यूँ ही गंवा देंगे। न सिर्फ गवायेंगे किंतु उनके नकारात्मक प्रभाव से दूसरे दिन को भी असफल करने के बीज बो देंगे। अगर हम अपने दिन को सुख और शांतिमय, तनावरहित व्यतीत करना चाहते हैं तो सुबह की शुरुआत इन छः संकल्पों के साथ करें।

सबसे पहले मैं एक शक्तिशाली आत्मा हूँ। मैं परमात्म प्रदत्त इस संसार में युनिक हूँ। तो सबसे पहले इस संकल्प को अपने मन-मस्तिष्क में इमर्ज कर 'मैं शक्तिशाली आत्मा हूँ' ये संकल्प करने से अपने भीतर मौजूद परमात्मा द्वारा दी हुई शक्तियां जागृत हो जायेंगी और अपनी शक्तियों से हम रुबरु हो जायेंगे। हम अनुभव करेंगे कि ओहो! मेरे पास तो सर्व शक्तियां मौजूद हैं और आपको उसका अनुभव होने लगेगा। और आप अपने आप को शक्तिशाली महसूस करने लगेगे। आप अपने आप को ऊर्जावान महसूस करेंगे। मैं हर कार्य के लिए सक्षम हूँ, ये ताकत और साहस आपमें पैदा होगी।

दूसरा संकल्प, मैं सदा खुश हूँ। क्योंकि खुशी मेरा वास्तविक स्वरूप है। जैसे कहते हैं ना आत्मा सत्-चित्-आनंद स्वरूप है। आनंद मेरा निजी रूप है, उसका गहराई से अनुभव करना है। मेरा हर संकल्प शुभ व श्रेष्ठ स्मृतियों से भरपूर है। इस अनुभव को अपने भीतर अनुभव करें और उन शक्तियों को

अपने अंदर इमर्ज करें। आपको अनुभव होगा, खुशी मेरे भीतर ही है और मेरा ये निज स्वरूप है।

तीसरा, मैं सदा स्वस्थ हूँ। मेरा शरीर हर पल मेरा साथ देता है। शरीर की हर कोशिकाएं अविरत, अखंड और अटल रूप से कार्य कर रही हैं। मैं अच्छा फील कर रहा हूँ। इस शरीर के साथ से ही तो इतना बड़ा कार्य करने में मैं सक्षम हूँ। इस शरीर का मालिक बनकर इस शरीर का सुचारू रूप से लालन-पालन करना है। ये शरीर परमात्मा द्वारा दिया हुआ बहुत सुंदर उपहार है। इस औजार से तो मैं इस संसार में हर कार्य सहजता से कर पाता हूँ। इसे कोसने के बजाय इसका शुक्रिया अदा करें।

चौथा, सबसे महत्वपूर्ण संकल्प है, इस समय परमात्मा मात-पिता के सम्बंध से मेरी पालना कर रहे हैं। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ, परमात्मा के सानिध्य में मेरा हर कर्म श्रेष्ठ व सुखदायी है। परमात्मा हर घड़ी मुझे एक छोटे बच्चे की तरह हाथ पकड़कर इस संसार से श्रेष्ठ संसार की ओर ले जा रहे हैं। जहाँ सुख ही सुख है। परमात्मा परमेश्वर मात-पिता ने मेरे सब कर्मों का बोझ हर लिया है। कहते हैं जन्म-जन्म से बोझ उठाते-उठाते आप थक गये हो, अब आप अपना बोझ मुझे दे दो, अकेले नहीं चलो। मैं आपके साथ-साथ हूँ, यानी कि सर्व शक्तियों सहित परमात्मा हमारे साथ हैं। जब ऐसा साथ है तो हर मुश्किलातें मुश्किल नहीं लगतीं, परंतु खेल की तरह उससे खेलते हैं। और सहज ही सब कार्य हो रहे हैं। परमात्मा का साथ और हाथ हर पल मेरे साथ है।

पाँचवा, मेरे सबके साथ अच्छे सम्बंध हैं। कहते हैं, रिलेशन इज द स्ट्रेन्थ। मेरे साथ अच्छे सम्बंध की शक्ति व सहयोग सदा मुझे सुखद बनाये रखती है। सुबह-सुबह ये संकल्प कर अपने मन को शक्तिशाली बनाना है। जहां सम्बंध अच्छे, वहां स्नेह और सुख परछाई की तरह है। परमात्मा ने मुझे न सिर्फ श्रेष्ठ सम्बंधों का ज्ञान दिया किंतु उसे निभाने के लिए शक्तियां भी दी हैं।

छठा, मैं फरिश्ता हूँ। फरिश्ता यानी कि डबल लाइट। न खुद के संस्कारों का बोझ, न ही सम्बंधों का बोझ। दोनों से ऊपर सदा लाइट, हल्का हूँ। इस सुहावने समय में इस धरा पर फरिश्ता बनकर रहने के लिए मुझे सुअवसर मिला है। मेरा कर्तव्य है, परमात्मा का संदेश जन-जन को देना, साथ ही सबको रूहानी सहयोग देकर उन्हें भी फरिश्तापन की महसूसता कराना।

इस तरह सुबह की शुरुआत इन छः संकल्पों के साथ कर अपनी शक्तियों को, योग्यताओं को पहचानें व उसकी अनुभूति करें। क्योंकि सुबह-सुबह इन संकल्पों को हमने विधि पूर्वक महसूस कर लिया तो वो हमारी एक शक्ति हो जायेगी। तब हम न सिर्फ बुराईयों से बचे रहेंगे बल्कि हमारा पुण्य का खाता भी बढ़ता रहेगा। और हम अपने जीवन को बहुत हल्का और आगे बढ़ता हुआ महसूस करेंगे। आप स्वयं रियलाइज़ करके देखिये, आपको बहुत अच्छा लगेगा। इस तरह सुबह की शुरुआत छः संकल्पों से कर सम्पन्नता की ओर आगे बढ़ें।

हमारा चेहरा खुशी वाला हो, सोचने वाला नहीं

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

जब हमारी अवस्था ठीक होती है तो सब अच्छा लगता है। जब अवस्था थोड़ी भी नीचे-ऊपर होती है तो अच्छा भी बुरा लगता है। उस समय मन समझ नहीं सकता कि यह अच्छा है या बुरा? उस समय समझ भी कम हो जाती है क्योंकि हमने छोटपन से सब प्रकार के अनुभव देखे हैं, छोटों का भी, बीच वालों का भी, अभी फिर वही बड़े हुए तो उन्हें निमित्त बड़ा कहते हैं, उनको भी देखा है। तो अनुभव तो भिन्न-भिन्न हैं। कोई हैं जो बहुत साधारण चलते हैं ऐसा भी अनुभव है। तो सभी खुश हैं? हमको तो यही रहता है कि ऐसे ना हो कि यहाँ रहते भी खुश नहीं हों। खुशी जरूर होनी चाहिए। खुशी के बिना यहाँ रहना ठीक नहीं है। उसके लिए क्या करना चाहिए? जिस किसी में फेथ हो तो उसकी राय ले सकते हैं।

लेकिन शक्ल पर खुशी जरूर होनी चाहिए। शक्ल सोचने वाली न हो, ऐसे नहीं जहाँ बैठें वहाँ सोच में चले जायें, नहीं। खुशी नहीं जाये। खुशी छोड़ के और फिर सोचते हैं तो रिजल्ट क्या हुई? खुशी तो चाहिए ना, सब इस बात में तो ठीक हैं ना! तो जिस बात में खुशी कभी गुम होती है उसका पुरुषार्थ करो क्योंकि हरेक का स्वभाव, हरेक का वर्क अपना-अपना है। उसके अनुसार जैसा डायरेक्शन मिले, वैसा करना चाहिए। इसमें कभी-कभी पूछना भी पड़ता है। बाकी हैं ठीक, जनरल क्या कहेंगे, ठीक हैं! ठीक हैं! ठीक होना ही चाहिए, हमारी खुशी कभी नहीं जाये बस, क्योंकि हम भगवान के बच्चे हैं डायरेक्ट। कोई

प्रॉब्लम हो तो उसे पुराना नहीं करो, कभी मिलेगा टाइम तो बता देंगे, नहीं, क्योंकि इसमें भी टाइम जो गंवाया वो कहाँ गया? वो तो खुशी कम हुई ना! हम तो देखते हैं बाबा ने हमारे लिए क्या नहीं सोचके किया है, हर छोटी बात को सोच करके यह रहने का स्थान बनाया है।

शुरू से ही हमने देखा है कि बाबा के अन्दर यही रहता कि बच्चों को कोई दुःख नहीं मिले, तो अभी भी यह ज़िम्मेवारी बड़ों की है और बताने वालों के ऊपर भी है, सहन करना समझे बहुत जरूरी है और सहन नहीं होता, अन्दर संकल्प भी चलता है। दुविधा में रहते हैं कि करें, नहीं करें..., तो वो लाइफ नहीं है। लाइफ माना खुशी। कोई सिर पर बोझ नहीं। कोई न कोई बीच-बीच में बोझ आता है, ऐसे नहीं। लेकिन उनको सोच-सोच के बड़ा नहीं बनाओ। अगर मानों ऐसा होता भी है तो स्पष्ट किसी को सुनाना चाहिए। बीच में ऐसे फेथफुल कोई हों तो उससे मिलके, राय करके उसका सहयोग ले सकते हैं, अच्छा है तो। ऐसे नहीं संग ऐसा लेंवे जो और ही उसको डुबो देवे। अभी के समय अनुसार मैं समझती हूँ, बाबा की रोज़ की मुरली ही हमारे लिए डायरेक्शन है, वरदान है। तो जो बाबा के इशारे होते हैं वो मुरली में ही होते हैं, अगर मुरली को आप पढ़ो उस ध्यान से, तो इसमें आज बाबा ने क्या कहा, अगर कोई कमी है तो वो अटेन्शन जरूर देना है और कोई को भी निमित्त बनाने के बजाय बाबा ही निमित्त अच्छा है लेकिन सिर्फ अटेन्शन देना।

मैं कौन, मेरा कौन बस ये दो शब्द... कोई कन्फ्यूज़न नहीं

राजयोगिनी दादी जानकी जी

मेरी भावना यह है कि हर एक बाबा का बच्चा समान है। हमारी दृष्टि, वृत्ति में ज़रा भी भेद-भाव न हो। ड्रामा अनुसार मुझ आत्मा को बाबा ने इस शरीर में क्यों बिठाया है, वो जानता है, मुझे दिखाता है तू क्यों बैठी हो! हर दिन, हर सेकण्ड जो बीता, जो कल होगा देखा जायेगा।

जब 'मैं' शब्द कहती हूँ तो उस 'मैं' में ज़रा भी देह अभिमान की निशानी न हो। बाबा क्या करता है, वो अनुभव थोड़ा भी देह अभिमान की निशानी भिन्न-भिन्न फीलिंग में ले आती है। देही अभिमान की फीलिंग ईश्वरीय स्नेह में सम्पन्न बनाती है। हमारी देही अभिमानि स्थिति होगी तो सर्वशक्तिवान बाप को हमें सर्व शक्तियों से सम्पन्न बनाना सहज हो जाता है। सर्वशक्तिवान बाप की शक्ति से हमारे अन्दर कोई भी कमी न हो। संगम पर बैठे हैं, यात्रा पर हैं, तैयारी नहीं कर रहे हैं। यात्रा पर हैं, आगे जहाँ जा रहे हैं और जो लेके जा रही है, यहाँ से उपराम होते जा रहे हैं। यहाँ मेरा कोई काम नहीं है, फीलिंग नहीं। कोई पीछे रह न जाये, उसका भी कोई फिक्र नहीं है, पर ऐसी कोई विधि आत्मा को पार कराके, खींच करके लेके

चले। उमंग-उत्साह के पंखों से पंछी के समान उड़ायें। तो एक सेकण्ड में रियलाइज़ करो कि रियल्टी और रॉयल्टी क्या है? बाबा जैसी एक्टिविटी और किसी की है ही नहीं। बाबा नॉलेजफुल है, पॉवरफुल है, ऑलमाइटी अथॉरिटी है। तुमको क्या करना है? जैसे बाबा कहते हैं किसी भी प्रकार की चिंता का नाम निशान नहीं है क्योंकि पता है करनकरावनहार बाबा है। बाबा क्या करता है, वो अनुभव मेरे से कराता है। किसी को भी नचाता है, यह नहीं देखता है कि इसकी आयु बड़ी हुई है, पता भी नहीं है आयु क्या होती है!

मैं कहती हूँ यह बहुत अच्छी आनंद लायक बात है कि मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, सारी लाइफ के अन्दर जब से बाबा की बनी हूँ, पहले भी दुनिया में मोह-माया क्या होती है, मुझे पता नहीं था। धन,सम्बन्ध में कोई आकर्षण नहीं थी, पर बाप कौन है, मैं कौन हूँ यह दो शब्दों की बात है, कोई कन्फ्यूज़न नहीं। तो प्लीज़ मूँझो मत, न आपको देखकर कोई मूँझ, इससे बड़ा पुण्य का खाता जमा होगा, इसके लिए सदा मौज में रहना, चित्त को शान्त रखना।



प्यारे सबके बनो, प्रिय एक बाबा को बनाओ

प्यारे बाबा ने हमें योगी भव का सहज स्वतः ही वरदान दिया है। बाबा कहते- अब तुम सब मेरे बच्चे हो, मैं तुम सब बच्चों का प्यारा बाबा हूँ, तुम मेरी सजिनियां हो, मैं तुम्हारा साजन हूँ। तुम मेरे हो, मैं तुम्हारा हूँ, तुम सब बच्चों को मैं अपने साथ ले चलने आया हूँ, और मैं देख रहा हूँ कि कैसे तुम मेरे बच्चे मेरे साथ घर की ओर दौड़ रहे हो। प्यारा बाबा आज आप सभी के बीच है और एक-एक बच्चे को मीठी-मीठी रूहानी दृष्टि दे रहा है। आप सबसे प्यारा बाबा बहुत मीठी-मीठी रुहरिहान कर रहा है। आपके पुरुषार्थ को, हिम्मत को, दिल को देख बाबा आप सबको बहुत-बहुत प्यार से गले लगा रहा है। अपनी गोदी में छिपा रहा है,क्यों? क्योंकि आपने कहा है हमारा एक बाबा दूसरा न कोई।

बाबा आप सबको अपने लाइट की किरणें पांव से चोटी तक दे रहा है। आपको अपनी शीतल दृष्टि से, शीतल बना रहा है। यह अनुभव होगा कि माया ने गर्म बनाया, बाबा अति शीतल बना रहा है। योगी की वाणी, काया, स्वभाव, संस्कार सब शीतल होते इसलिए इस ज्ञान अमृत को पीने से शीतल बन जाते क्योंकि बाबा हमारा बहुत-बहुत मीठा, प्यारा, शीतल है।

बाबा को तरस के साथ, रहम के साथ कड़ी करुणा के भाव आ रहे

हैं। आप सब इस कलियुगी दुनिया से बचकर, दौड़कर बाबा के पास आये, आप सबने अपने दिल में सच्चा बाबा बिठाया है। कई बच्चे हैं जो बाबा के ऊपर अपना सबकुछ कुर्बान करने के लिए तैयार हैं, सच्चे पुरुषार्थी हैं, कई हैं जो यह नहीं समझते कि हम इस इन्द्रप्रस्थ के सच्चे देवतायें हैं इसलिए अपनी वृत्तियों में लापरवाह हैं। जिन्हें देहअभिमान है, रावण की तरफ बुद्धि है वह और ही अपनी बुद्धि में बुराईयों को लाते।

कई तो अपना किचड़ा बाबा को देकर शीतल हो रहे हैं, कई फिर बुरे वायब्रेशन रखते हैं। जो आपके साथ छोटी या बड़ी बहनें हैं वह आपकी माँ हैं। भले वह छोटी बच्चियां हैं लेकिन आपकी माँ के समान हैं। वृत्ति में रहे कि हम सब एक बाप के बच्चे हैं, हम छोटे बच्चे हैं, छोटे लाल हैं, वह हमारी माँ हैं। चाहे छोटी हैं चाहे बड़ी हैं। आप सबको माँ देखो। माँ देखेंगे तो आपके अशुद्ध संस्कार समाप्त हो जायेंगे। वृत्ति-दृष्टि शुद्ध हो जायेगी।

बाबा हमारा प्राणेश्वर है, एक बाबा सभी सम्बन्धों का दाता है। यह जो सवाल है हमारी पुरानी आदतें नहीं मिटती- तुम इन सब बातों को सोचना छोड़ दो। माया भल तूफान लाये, तुम्हें उसके बस नहीं होना है, तुम बाबा के सर्व सम्बन्धों के रस में लीन रहो। बाबा "हमारा मीठा



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा है" - कभी इस सम्बन्ध का रस लो, कभी उसे प्यारा सखा बनाओ, दिल की बातें उससे करते रहो तो देखो वह कितना बहलता है। कभी उसे साजन के रूप में देखो, कभी उसे बेटा बना लो, उस पर सारा तन-मन-धन स्वाहा कर दो। कोई दिन धर्मराज के रूप से देखो, ऐसे एक-एक दिन एक-एक सम्बन्ध का रस लो, उसी सम्बन्ध से उससे रुहरिहान करो तो दैहिक सम्बन्धों की आकर्षण खत्म हो जायेगी। पुराने सब संस्कारों को समाप्त करने का साधन ही है- सर्व सम्बन्धों का रस एक बाबा से लो।

बाबा ने हम बच्चों को कोई हठयोग नहीं सिखाया लेकिन अमृतवेले उठ बाबा से शक्ति जरूर लो। शक्ति प्राप्त हुई तो पिछले सब संस्कार खत्म हो जायेंगे। अकेले बन, अकेले में, अकेले बाबा को याद करो। अपनी पढ़ाई में मस्त रहो। यह मुरली, यह ज्ञान रत्न आपको बहुत-बहुत मदद करेंगे। पढ़ाई से

बाबा हमारा प्राणेश्वर है, एक बाबा सभी सम्बन्धों का दाता है। यह जो सवाल है हमारी पुरानी आदतें नहीं मिटती- तुम इन सब बातों को सोचना छोड़ दो। माया भल तूफान लाये, तुम्हें उसके बस नहीं होना है, तुम बाबा के सर्व सम्बन्धों के रस में लीन रहो।

बहुत-बहुत प्यार रखो।

योगी का अर्थ ही है नियम और संयम, जितना अपने को मर्यादाओं में रखेंगे उतना अपनी मस्ती में मस्त रहेंगे। दूसरा क्या खाता, कैसे रहता, वह नहीं देखो। अपनी मौलाई मस्ती में मस्त रहो तो अश्लीलता पर नज़र जायेगी ही नहीं। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् को देखो। हमारे वह नयन बाबा ने निकाल दिये- मेरे तो दिव्य नयनों में अपना प्यारा बाबा बसता, स्वर्ग बसता।

जैसे परीक्षा के समय पढ़ाई पर ध्यान रहता है, ऐसे समझो अब हमें बाबा के घर जाना है, सम्पन्न होना है। हमारे सब परीक्षा के दिन चल रहे हैं। यह हमारा पेपर है कि हमें बाप के समान सम्पन्न बनना है। हमें अपने सभी पिछले खाते योग से खत्म करने हैं। हमें बाबा से नई दुनिया के लिए नम्बरवन प्राइज़ लेनी है। हमें विनर बनना है, उसके लिए पेपर है मायाजीत जगत जीत बनने का।



ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

योग अर्थात् एक बल, एक भरोसा

उपराम
हो कोई
मेरे साथ
योग
जुटा
सके।

परन्तु

भगवानुवाच- योगयुक्त वत्सों, योगी की अवस्था बड़ी मस्त होती है क्योंकि वह पवित्रता में रहते हुए संसार के सब सहारों और आधार से उपराम होकर निरसकल्प और निर्भय रीति से एक मुझ सर्वशक्तिमान से अपना सर्व सम्बन्ध जोड़, अतिन्द्रिय सुखमय जीवन व्यतीत करता है। जैसे एक सच्चा आशिक खाते-पीते अथवा जीवन निर्वाहार्थ कार्य करते भी अपनी माशूका (प्रेमिका) की याद में मस्त रहता है, अथवा जैसे किसी पतिव्रता स्त्री की लगन अपने पति से ही लगी रहती है। ऐसे ही सच्चा योगी भी अपने मन में संसार के सर्व सम्बन्ध तोड़ स्वयं को कर्मातीत निश्चय कर, बस एक मुझ ही से प्रीति जोड़ता है। उसे भले ही कितनी भी परीक्षाएं आती हैं, कष्ट सहन करने पड़ते हैं, परन्तु वह एक मुझ सर्व-समर्थ के सहारे पर अडोल रीति खड़ा हो, 'रिचक' भी न मुरझाता न डगमगाता, क्योंकि वह तो मेरे ही अर्पणमय होकर जीता है ना, मेरे ही अर्थ निमित्त हो सब कर्म करता है ना! इसलिये, वह मुझे ही रक्षक, पालनहार, सदातिदाता प्रभु निश्चय कर, उपराम चित्त हो निरन्तर मुझ ही से बुद्धि की सूक्ष्म तारों द्वारा, मेरा ज्ञान, शान्ति, शक्ति, प्रेम इत्यादि का अव्यक्त वर्सा (सम्पत्ति) पाते दिन-प्रतिदिन उज्जति को प्राप्त होते रहता है। मेरी याद में रहने, मेरा ही परिचय दूसरों को देने, मेरे ही प्रेम में मुग्ध हो, मेरे स्वरूप को मनन कर वह हर्षित होता रहता है और अपने जीवन को अलौकिक, अनमोल, दिव्य बनाते हुए दूसरों को भी अपने समान बनाने की सर्विस में तत्पर रहता है।

अब ऐसा योग तो तुम्हारे सिवा अन्य कोई जानता नहीं क्योंकि यह रूहानी योग रूहों के मुझ पिता के सिवा और कोई सिखा नहीं सकता। जब मैं स्वयं ब्रह्मा के साकार मनुष्य-तन में पधार कर अपना परिचय दे, अपनी प्रॉपर्टी (अविनाशी सम्पत्ति) का साक्षात्कार कराके, अपने दिव्य चरित्रों से बहला कर, विनाश की बात समझा कर, प्रैक्टिकल रीति से अपने साथ सर्व-सम्बन्ध जुटाने की युक्ति बताऊँ तभी तो एक मेरी ही सर्वोत्तम मत पाकर, अन्य सभी सम्बन्धों से

इन बातों से अपरिचित होने के कारण वर्तमान समय तक भारतवासी अनेक प्रकार के हठयोग और शारीरिक योग करते आए हैं जिससे वो सम्पूर्ण सुख और शान्ति और देवी जीवन को पा ही नहीं सकते। उन्हें उस सहज ज्ञान-योग का परिचय ही नहीं जिससे मनुष्य के जन्म-जन्मान्तर के विकर्म विनाश हों, नये संस्कार और नया जीवन बने। हठ द्वारा अथवा शारीरिक साधनाओं द्वारा मनुष्य के मन की वृत्ति, काम, क्रोध मोह इत्यादि विकारों से पूर्ण रीति उपराम तो हो नहीं सकती और बुद्धियोग मेरे साथ जुटाए बिना मन के विकल्पों और विकारों को भस्म करने के लिये अन्य किसी तरीके से शक्ति मिल नहीं सकती। इसलिये आज अनेक योग-पाठशालायें होते हुए भी भारतवासी दिन-प्रतिदिन अधिक ही विकारी, दुःखी और अशान्त होते जाते हैं, क्योंकि आत्मा ही को परमात्मा बताने वाले, अथवा परमात्मा को सर्वव्यापी मानने वाले कर्म-सन्ध्यासियों, अथवा तत्व-योगियों ने मेरे निवासधाम, अर्थात् अचैतन्य ब्रह्मधाम के साथ योग लगाने की शिक्षा दे मनुष्यात्माओं को मुझसे बिल्कुल ही विमुख कर दिया है।

इसलिये, अब तुम अनुभवी वत्सों ही को दुःखी मनुष्यात्माओं पर उपकार करना चाहिये। उन्हें मेरे स्वरूप का परिचय देकर उनका रूहानी सम्बन्ध मेरे साथ जुटाने का शुभ-कर्तव्य तुम सच्चे ब्राह्मणों ही को करना है, क्योंकि कल्प-कल्प, 'संगम समय' ही ऐसी सुहावनी ऋतु है जबकि मुझ परमपिता परमात्मा के साथ तुम ब्राह्मण ही सब आत्माओं रूपी सजिनियों का योग जुटाने के लिए निमित्त बने हुए हो। लोगों को बताना चाहिये कि 'परमात्मा तो सर्व आत्मा रूपी भक्तियों का भगवान, सजिनियों का साजन, पतियों का पति अथवा बच्चों का अविनाशी बाप है। वह नाम-रूप से न्यारा व सर्वव्यापी नहीं है, न आत्मा ही परमात्मा है। उनसे पूछना चाहिए कि "अगर आत्मा ही परमात्मा है, सब भगवान ही भगवान हैं तो फिर आत्मा को योग लगाने की आवश्यकता क्या है, वह योग लगावे ही किससे? क्या अपवित्र आत्मा स्वयं से योग लगावे?" उन्हें सुनाना चाहिए कि 'ब्रह्म' महतत्व

से योग जुटाने वाले सन्ध्यासियों का मत भारत के 'आदि सनातन देवी-देवता धर्म से अलग है। भारत के सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी जो जीवनमुक्त देवी-देवता हुए हैं, उन्होंने तो वह डबल-सिरताज देवी या देवता पद मुझ शिव परमात्मा ही से योगयुक्त होकर प्राप्त किया था। इस कारण ही इस योग को 'सहज राजयोग' भी कहा जाता है, क्योंकि राजाओं का भी राजा बनाने वाले इस योग के लिए कोई हठ तथा यातनाओं की आवश्यकता नहीं है, बल्कि श्वासों-श्वास मुझ परमात्मा ही की अव्यभिचारी याद में रहने का पुरुषार्थ करना है।

परन्तु यह याद स्थिर तभी हो सकती है जब कोई मनुष्यात्मा देह के सब सम्बन्धों, धर्मों इत्यादि का आधार छोड़, मेरे साकार रूप द्वारा मेरे ही अर्पण हो, एक मेरी ही मत पर चल, एक मेरे बल और भरोसे पर निश्चित खड़ा रहे, क्योंकि जब तक किसी को कोई और आधार, बल अथवा भरोसा है, तब तक उसे मेरी ही निरन्तर याद रहे, अथवा श्वासों-श्वास मुझ ही के साथ बुद्धि योग जुटा रहे, यह हो नहीं सकता। सम्पूर्ण बुद्धियोग के लिए सम्पूर्ण सन्ध्यासी बनना अर्थात् मेरी ही सेवा में तत्पर, मुझ ही का होकर मेरी आज्ञा पर चलना बिल्कुल आवश्यक है। इसके बिना मेरे सम्पूर्ण वर्से की प्राप्ति भी नहीं हो सकती, क्योंकि जो जितना मेरा बनता है, मैं भी उस अनुसार उनका बनता हूँ।

यूँ तो सब मनुष्यात्मायें मुझको प्यारी हैं परन्तु जो मनुष्यात्मा मुझ पिता शिव पर जितनी बलिहार जाती है, जितनी कुर्बान होती है, मैं भी उस अनुसार ही उस पर अपना सब कुछ वार देता हूँ। यह तो तुम समझ सकती हो कि जो मुझ एक ही के बल और एक ही के भरोसे पर जितना एक-टिक खड़ा है, मुझे भी सर्वस्व सहित उसी का ही होना होता है। इसलिये मनुष्यों को समझाना चाहिए कि सारी सृष्टि का मालिक, बेहद सम्पत्तिवान जो परमपिता शिव है वह सर्वव्यापी नहीं, वह तो ज्योतिर्बिन्दु है, सालिग्राम मनुष्यात्माओं के सृष्टि रूपी वृक्ष का अविनाशी बीजरूप है, सबका पारलौकिक पिता है, त्रिमूर्ति अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का भी रचयिता, निराकार यानी अव्यक्तमूर्त है। वह तो परलोक का निवासी, वैकुण्ठ का राज्य-भाग्य दिलाने वाला है। उन्हें समझाना चाहिए कि उस पिता परमात्मा की और उसकी रचना की, अथवा उसके मुक्तिधाम तथा जीवनमुक्तिधाम की निरन्तर याद में रहना ही, भारत का सर्व-प्राचीन, आदि सनातन रूहानी योग है।



मुम्बई-डोम्बिवली। राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी, ब्र.कु. वंदना बहन, ब्र.कु. रुक्मिणी बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।



नई दिल्ली। अनुराग ठाकुर, यूनिनयन मिनिस्टर फॉर इनफॉर्मेशन एंड ब्रॉडकास्टिंग, यूथ एंड स्पोर्ट्स को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विजय दीदी, दिल्ली पाण्डव भवन। साथ हैं ब्र.कु. शिविका बहन, माउण्ट आबू।



इंदौर-इंदरपुरी(म.प्र.)। विशाल नगर मैदान अन्नपूर्णा रोड में खेड़ापति सरकार लक्ष्य सेवा समिति एवं जीतू पटवारी, भारत पटवारी द्वारा आयोजित शिव महापुराण कथा में कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा जी सीहोर वाले को ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा ईश्वरीय सौगात भेंट की गई। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज के ओम शांति भवन पलासिया से ब्र.कु. रेवती दीदी व ब्र.कु. अनीता दीदी, ब्र.कु. शशि दीदी, प्रभारी, मुख्य सेवाकेन्द्र प्रेमनगर इंदौर पश्चिम क्षेत्र, ब्र.कु. छाया दीदी, प्रभारी, इंदौर रामबाग, ब्र.कु. अन्नपूर्णा दीदी, ब्र.कु. विकास दीदी, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. दीपाली बहन, ब्र.कु. आयुषी बहन तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें उपस्थित रहीं। इस दौरान शिव महापुराण के आयोजकों द्वारा विशाल प्रांगण में दो लाख भक्तों के बीच 70 समर्पित ब्रह्माकुमारी बहनों को सम्मानित किया गया।



राजगढ़-म.प्र। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के शिव वरदान भवन सेवाकेन्द्र में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु दीदी, पूर्व विधायक रघुनंदन शर्मा, पेंशनर संघ के अध्यक्ष दिनेश नागर, कथावाचक एवं वरिष्ठ शिक्षक के.के. नागर, पीएचपी के एक्जीक्यूटिव इंजीनियर गोविंद भूरिया, पीएचई के रिटा. इंजीनियर प्रताप सिंह सिसोदिया, पीडब्ल्यूडी के एसडीओ शिव कुमार वर्मा, रिटा. बैंक मैनेजर अरविंद सक्सेना तथा ब्र.कु. सुरेखा बहन।



रतलाम-पत्रकार कॉलोनी(म.प्र.)। नवनिर्वाचित महापौर प्रहलाद पटेल को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. सविता दीदी, समाजसेवी राजेन्द्र पोरवाल, के.एल. मेहता तथा अन्य।



कटनी-म.प्र। एस.पी. ऑफिस कंट्रोल रूम में पुलिस आरक्षण कर्ताओं को तनाव से मुक्त रहने की विधि बताते हुए ब्र.कु. भारती बहन।



रायपुर-छ.ग। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सीआरपीएफ के जवानों के लिए ओडका गांव में केन्द्रीय आरक्षित पुलिस बल, इंडक्शन, आरंग के जवानों के लिए आयोजित कार्यक्रम में राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. रश्मि दीदी, सीआरपीएफ के डिप्टी कमाण्डेंट प्रियंजन गुप्ता, ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. अदिति बहन, ब्र.कु. दीक्षा बहन आदि उपस्थित रहे।



नई दिल्ली। बीजेपी नेशनल प्रेसिडेंट जे.पी. नड्डा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शिविका बहन, माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. प्रकाश भाई, माउण्ट आबू।



ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई एवं ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने भारत के पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के आवास पर उनसे मुलाकात की। राष्ट्रपति कोविंद ने संस्थान की प्रशंसा करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज में एक अलौकिक आकर्षण है। यहाँ के भाई-बहनों के सफेद वस्त्रों से विशेष खिंचाव होता है। ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि पवित्रता ही जीवन को आकर्षक बनाती है। इस मौके पर ब्र.कु. हुसैन बहन भी उपस्थित रहीं।



नई दिल्ली-ओम विहार। भारत के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकात कर ज्ञानचर्चा एवं उन्हें रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विमला बहन तथा ब्र.कु. सारिका बहन, हरिनगर। साथ ही रक्षामंत्री को कैप्टन शिव सिंह, पूर्व कमाण्डर तथा ब्र.कु. अटल भाई ने ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय में सिक्योरिटी सर्विस विंग द्वारा होने वाले 'इंस्पिरेशनल लीडरशिप एंड सेल्फ एम्पावरमेंट' कॉन्फ्रेंस में आने का निमंत्रण भी दिया।

चुनौतियों का सामना विवेक शक्ति से

चुनौती हर एक के सामने आती है लेकिन किसी-किसी के लिए यही चुनौती अवसर के द्वार खोलती है और किसी-किसी के लिए यही चुनौती अवसर के द्वार बंद करती है और खूब पछाड़ती है। चुनौती के वक्त जो अपने मन को शान्त रख सकते हैं और सही निर्णय ले सकते हैं उनके लिए अवसर के द्वार खुलते हैं। लेकिन चुनौती के वक्त जो बहुत टेन्शन में रहता है, कन्फ्यूज रहता है, सही निर्णय नहीं ले पाता, स्वार्थ वश या किसी बात के प्रभाव वश अगर निर्णय लिया तो वो द्वार बन्द हो जायेंगे और वो पछाड़ने वाला अनुभव करेंगे। बाद में फिर अफसोस करना पड़ता है। क्या करें, उस वक्त मेरे ध्यान में ये बात आयी नहीं। फलाने ने मुझे ऐसा कहा इसलिए मैंने ऐसा किया। बाबा कहते कि तुमको किसी और के ऊपर ब्लेम (आरोप) लगाने नहीं लगाना। वास्तव में तुम खुद कितने कन्फ्यूज थे, कितने तनाव में थे इसलिए गलत निर्णय लिया। इसलिए आज तुमको पछाड़ती है। इसलिए चुनौती के वक्त अपने मन को शांत रखो, क्लीयर रखो।

दादी जानकी तीन शब्दा हमेशा कहती थीं- 'क्लीन, क्लीयर और प्यूर'। माइड को क्लीन रखो, स्वच्छ रखो। व्यर्थ बातों से भरो नहीं, उसको अस्वच्छ नहीं करो। निगेटिव बातों से अस्वच्छ नहीं करो। बुद्धि को क्लीयर रखो, स्पष्ट रखो। बुद्धि क्लीयर होनी चाहिए, कन्फ्यूज नहीं होनी चाहिए। और दिल प्यूर हो तो मन स्वच्छ, बुद्धि स्पष्ट और दिल निर्मल (पवित्र)। जितना निर्मल और पवित्र रहेगा उतनी हर चुनौती को पार करना आसान होगा। दुनिया के अन्दर लोगों के सामने तभी अनेक प्रकार की चुनौती बढ़ जाती है जब देहअभिमान वश हो चलते हैं। इसीलिए जितना हम निर्माण होकर चलेंगे, निमित्त बन करके चलेंगे, बाबा करनकरावनहार ये समझते हुए चलेंगे तो समस्यायें खत्म हो जायेंगी। चुनौतियाँ पिछड़ जायेंगी। वो आपके सामने आ नहीं सकेगी।

बाकी एक चुनौती जो वर्तमान समय में हर ब्राह्मणों के लिए अपना सिर ऊँचा कर रही है। जो ध्यान देने योग्य बात है, वो है आज के समय में अनेक अपने आप को भगवान

कहलाने वाले आ गये। बाबा मेरे में आता है। मम्मा मेरे में आती है। दादियाँ मेरे में आती है ये बहुत बड़ी चुनौती है। परख शक्ति नहीं होगी तो क्या होगा? फँस जायेंगे। शास्त्रों में एक बात आती है। कौन-सी बात आती है? पौंड्रक की कहानी आती है जो आपने सुनी होगी। जिसके पास ऐसी शक्ति थी कि वो कोई भी रूप धारण कर सकता था, और इसीलिए कहा जाता है कि उसने श्रीकृष्ण का रूप धारण कर लिया और श्रीकृष्ण द्वारिका से कहीं बाहर गये हुए थे। उस समय पौंड्रक श्रीकृष्ण का रूप धारण करके वहाँ आकर बैठ गये और सारे नगर में, द्वारिका में सब लोग यही समझने लगे कि श्रीकृष्ण आ गये, द्वारिकाधीश आ गये।



ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

द्वारिकाधीश-द्वारिकाधीश करके उसकी जयजयकार भी बुला दिया गया। और सचमुच में जब श्रीकृष्ण आये। तो उसने उसको फ्रॉड (छल) बना दिया। उसका फ्रॉड सिद्ध कर दिया। लेकिन अन्त में सत्य, सत्य ही रहता है।

ठीक इसी समय अभी जैसे-जैसे अंतिम समय की ओर आगे बढ़ रहे हैं। ये बहुत बड़ी चुनौती ब्राह्मणों के लिए है, अब तीसरी बार यह झाड़ हिलने वाला है। कच्चे बच्चे सब साकार मुरली में सुना होगा। अच्छे-अच्छे बच्चे भी जायेंगे। उसमें आश्चर्य नहीं हो सकता क्योंकि परख शक्ति की कमी। उस पौंड्रक को पहचान नहीं सके। जो कहते बाबा-मम्मा आते हैं। हमें अच्छी पालना दे रहे हैं। इतनी अच्छी ज्ञान की बातें सुनाते हैं। अगर भगवान को आना ही था, तीसरा रथ लेना ही था तो इतना बड़ा

यज्ञ जो भगवान ने बनाया, इतना विशाल वट (वृक्ष) जो बनाया। क्या यहाँ उसको तीसरा कोई रथ ही नहीं मिला! जो उसको बाहर वाले कोई आत्मा के अन्दर आना पड़े! सोचने की बात है। क्या यहाँ कोई पवित्र आत्माएं है ही नहीं!

जिस धरनी को भगवान ने अपनी शक्ति से सींचा, पवित्रता की शक्ति से सींचा बाबा मधुबन के अलावा कहीं और आया है? बाबा ने कहा, हाँ, जहाँ मधुबन बनायेंगे वहाँ बाबा आयेंगे। जानकी दादी एक बार बहुत पीछे बाबा के लगे थे। बाबा एक बार लण्डन आ जाओ, एक बार लण्डन आ जाओ। बाबा ने उस समय ये बात कही थी कि जहाँ मधुबन होगा वहाँ बाबा आयेगा। अब आज भगवान नगर-नगर घूम रहा है। क्या आज उसका कोई अस्तित्व नहीं? ऐसा हो सकता है कभी? विवेक को यूज करने की बात है। अगर कोई भी कहे कि हमारे पास भगवान आता है तो ये तो निश्चय की परीक्षा है ना! यही तो निश्चय को हिलाने वाली बात है। और जो कच्चे होंगे वो तो झड़ने ही हैं क्योंकि झाड़ बहुत वृद्धि को प्राप्त कर चुका है। भगवान वसा किनको देंगे? निश्चयबुद्धि विजयन्ती या संशयबुद्धि विनश्यन्ती?

मुझे याद आता है जब हम पहली बार आये मधुबन में, हिस्ट्री हॉल में बाबा मिलता था। छोटा-सा परिवार था। एक दिन छोड़ कर बाबा मिलता था। उसके बाद जैसे-जैसे वृद्धि हुई फिर दो दिन छोड़ कर, फिर हफ्ते में एक दिन, फिर सेंटर वालों से, फिर ज़ोन के हिसाब से, फिर भारत और विदेश वाले ये हो गया। मतलब जैसे-जैसे वृद्धि होती गई वैसे-वैसे बाबा का सभी से पर्सनली मिलने का समय भी पूरा होता गया। अगर बाबा को तीसरा रथ लेना ही था तो समेटना क्यों चालू किया? उसी समय से बाबा ने कहा था कि बच्चे ये अव्यक्त बापदादा का व्यक्त में मिलन कब तक! बाबा ने यहाँ तक इशारा दिया था कि बच्चे अव्यक्त बनकर के अव्यक्त मिलन मनाओ। जितनी देर तक मिलन मनाना चाहो मिलन मना सकते हो। जब बाबा ने पहले से ही हमारे अन्दर ये बीजारोपण किया कि बच्चे, बाबा कब तक आता रहेगा? अब आप लोग ऊपर आओ।

- शेष पेज 7 पर



सतना-कृष्णा नगर(म.प्र.)। टाउन हॉल में जिला पंचायत अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, ग्राम पंचायत अध्यक्ष उपाध्यक्ष एवं सभी जिला पंचायत सदस्यों के शपथ ग्रहण समारोह में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित रक्षाबंधन स्नेह मिलन के दौरान कृषि राज्यमंत्री राम खिलावन पटेल व सांसद गणेश सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रानी बहन। इस मौके पर कलेक्टर अनुराग वर्मा, जिला पंचायत सीईओ डॉ. परीक्षित संजय राव, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत, पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमति सुधा सिंह आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088, Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, अजीवन - 6000 रुपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

**BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO:- 30826907041, IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya, Shantivan**

Note:- After Transfer send detail on E-Mail -omshantimedia.acct@bkivv.org

OR

Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087

ALL-IN-ONE QR

Paytm
Accepted Here

Wallet KYC NOT Required

Scan & Pay using Paytm App

Wallet or Bank A/c Any Debit or Credit Card Paytm Postpaid



BHIM UPI



बिजावर-छतरपुर(म.प्र.)। 'कल्प तरु' अभियान के तहत देवरा एवं लल गवा ग्राम में हरियाली तीज के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर ग्राम देवरा के नव निर्वाचित सरपंच मोतीलाल दुबे, वन समिति अध्यक्ष नाथूराम बिंदुआ, प्रधान अध्यापक शिव कुमार दुबे, प्राथमिक शिक्षक सेवाराम यादव, गोकुल प्रसाद यादव, मूलचंद कुशवाहा, कैलाश कुशवाहा तथा अन्य ग्रामवासियों सहित ब्र.कु. प्रीति बहन व ब्र.कु. शिल्पा बहन उपस्थित रहे।



इंदौर-गंगोत्री(म.प्र.)। 'कल्प तरु' परियोजना के तहत आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में ब्र.कु. सीमा बहन, सिंहासन ग्राम पंचायत के नवनिर्वाचित सरपंच नारायण चौहान, लकी सेंटर पेट्रोल पंप के ओनर सुनील लड़ड़ा, जनपद सदस्य जितेंद्र यादव, ठेकेदार नंदकिशोर चौहान, ब्र.कु. प्रतिमा बहन, ब्र.कु. ललिता बहन तथा अन्य भाई-बहनों शामिल रहे।

ज्ञान का प्रैक्टिकल स्वरूप योगी जीवन



वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी
ब्र.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू

ने अर्जुन को ज्ञान दिया तो अर्जुन स्वयं भी विद्वान था। इसलिए वो ल ग ा त ा र आर्गुमेंट (बहस) ही करता रहता है। भगवान से वो बहस करता था क्योंकि वो भी विद्वान था। इसलिए बार-बार पूछता था कि भगवान तो कहते हैं लेकिन इसका अर्थ क्या है? इसको कैसे अभी-अभी राजयोग कहते हैं, अभी-अभी कर्मयोग कहते हैं लेकिन मेरा योग तो आपसे लगता ही नहीं है। इस प्रकार अर्जुन बहस करता हुआ दिखाते हैं। तब तक अर्जुन को न निश्चय होता है और न ही भगवान के आगे समर्पण होता है। लेकिन 18 अध्याय के बाद आपने पढ़ा होगा 18 अध्याय में ये श्लोक आता है इतना ज्ञान सुनने के बाद अर्जुन लास्ट में समर्पित होता है और वो कहता है कि अब मुझे स्मृति आई है कि मैं कौन हूँ और आप कौन हैं। अब मेरे सारे संशय समाप्त हो गये हैं। मेरा रोम-रोम अब हर्षित हो रहा है। हे भगवान! अब आप जो कहेंगे वो मैं करूँगा। तब अर्जुन नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा बनता है, 18 अध्याय के अन्त में। तो ये संगमयुग की ही यादगार है। प्रैक्टिकल पढ़ाई स्वयं शिवबाबा, स्वयं भगवान ने टीचर बन पढ़ाया। वास्तव में अगर सत्यता को समझें तो साकार बाबा ने, बाबा अव्यक्त हुए उसके साथ प्रैक्टिकल पढ़ाई तो पूरी हो गई। जो रोज टीचर स्वयं आकर पढ़ाते थे वो पार्ट तो पूरा हो गया। उसके बाद तो रिवीजन कोर्स चल रहा है। जैसे स्कूल में भी जब तक कोर्स चलता है तो रोज टीचर आकर पढ़ाते हैं, लेकिन कोर्स पूरा हो जाता है रिवीजन का टाइम आता है एग्जाम के पहले तो रोज टीचर आकर नहीं

है। हम सभी जो 1969 के बाद ज्ञान में आये हैं वो तो सब रिवीजन कोर्स में आये हैं। मेरे कहने का भाव है कि पढ़ाई पूरी हो गई और रिवीजन कोर्स चलने का समय अब समाप्त होने को आया। अब भी हम बुद्धि का समर्पण नहीं करेंगे तो कब करेंगे! और बुद्धि को समर्पण करना माना जो बाबा कहे वो ही मुझे करना है। जो नहीं करना है, जिसके लिए बाबा ना कहता है वो मुझे नहीं करना है। तब कहेंगे कि हम नष्टोमोहा बनकर स्मृतिर्लब्धा बनते जा रहे हैं। प्रैक्टिकल हम एग्जाम्पल बनते जा रहे हैं। तो ये है कि समझने के बाद, निश्चयात्मक बुद्धि बनने के बाद, बुद्धि बाबा को समर्पण करने के बाद आचरण में ज्ञान आता है। और कर्म में ज्ञान आना, व्यवहार में श्रीमत को धारण करना, ज्ञान के हर महावाक्य का

प्रैक्टिकल स्वरूप बनना उसको कहेंगे सही अर्थ में सच्चा योगी जीवन। योगी बनना माना ये नहीं है कि हम चार घंटा पालथी मारकर बैठ गये और आचरण में कुछ भी नहीं। ज्ञान का प्रैक्टिकल स्वरूप है योगी जीवन। हर श्रीमत की धारणा स्वरूप बनना वो है योगी बनना।

बुद्धि को समर्पण करना माना जो बाबा कहे वो ही मुझे करना है। जो नहीं करना है, जिसके लिए बाबा ना कहता है वो मुझे नहीं करना है। तब कहेंगे कि हम नष्टोमोहा बनकर स्मृतिर्लब्धा बनते जा रहे हैं।

पढ़ाते, जहाँ मुश्किल लगती है वहाँ टीचर की हेल्प लेते हैं, और लास्ट है एग्जाम। तब टीचर साक्षी बन जाते हैं फिर वो हेल्प नहीं कर सकते।

बाबा का अव्यक्त होना माना प्रैक्टिकल पढ़ाई का कोर्स पूरा हो गया। अभी रिवाइज कोर्स चल रहा

है। हम सभी जो 1969 के बाद ज्ञान में आये हैं वो तो सब रिवीजन कोर्स में आये हैं। मेरे कहने का भाव है कि पढ़ाई पूरी हो गई और रिवीजन कोर्स चलने का समय अब समाप्त होने को आया। अब भी हम बुद्धि का समर्पण नहीं करेंगे तो कब करेंगे! और बुद्धि को समर्पण करना माना जो बाबा कहे वो ही मुझे करना है। जो नहीं करना है, जिसके लिए बाबा ना कहता है वो मुझे नहीं करना है। तब कहेंगे कि हम नष्टोमोहा बनकर स्मृतिर्लब्धा बनते जा रहे हैं। प्रैक्टिकल हम एग्जाम्पल बनते जा रहे हैं। तो ये है कि समझने के बाद, निश्चयात्मक बुद्धि बनने के बाद, बुद्धि बाबा को समर्पण करने के बाद आचरण में ज्ञान आता है। और कर्म में ज्ञान आना, व्यवहार में श्रीमत को धारण करना, ज्ञान के हर महावाक्य का



अम्बाजी-गुज। माननीय मुख्यमंत्री भूपेन्द्र भाई पटेल का स्वागत करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. दीपिका बहन, ब्र.कु. चंद्रिका बहन तथा ब्र.कु. मनोज भाई।



नई दिल्ली। यूनिनय मिनिस्टर फॉर रेलवेज अश्विनी वैष्णव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विजय दीदी। साथ हैं ब्र.कु. शिविका बहन, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई तथा ब्र.कु. प्रकाश भाई, माउण्ट आबू।



भाटापारा-छ.ग। 'मैजिक शो' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए विधायक शिवरतन शर्मा, समाजसेवी बंटी छाबड़ा, अधिवक्ता जी.डी. मानिकपुरी, ब्र.कु. मंजू बहन तथा ब्र.कु. प्रभा बहन।



अलीराजपुर-म.प्र। पुलिस कंट्रोल रूम में आयोजित आरक्षकों के इंडक्शन ट्रेनिंग कार्यक्रम में 'तनाव मुक्त जीवन' विषय पर सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. नारायण भाई, इंदौर। इस मौके पर ब्र.कु. ज्योति बहन ने आंतरिक शांति की अनुभूति हेतु राजयोग का अभ्यास कराया।



खरगोन-म.प्र। कार्यालय पुलिस अधीक्षक जिला खरगोन द्वारा जिला बल के पदोन्नत हुए आरक्षकों से प्रधान आरक्षक शासकीय सेवकों के इण्डक्शन कोर्स के हेतु 'तनाव मुक्ति एवं ध्यान योग' के लिए ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. मनीषा बहन, पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री, रक्षित निरीक्षक श्रीमति रेखा रावत, सुबेदार सुरेश सिसोदिया, ब्र.कु. देवकन्या बहन, ब्र.कु. श्याम भाई आदि उपस्थित रहे।



इंदौर-प्रेम नगर(म.प्र.)। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज उपसेवाकेन्द्र एवं मोयरा सरिया के संयुक्त तत्वाधान में 'कल्प तरु' प्रोजेक्ट के तहत शासकीय माध्यमिक स्कूल, ग्राम सुलावड़ तथा कस्तूरबा गर्ल्स हाईस्कूल परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर मोयरा सरिया कंपनी के सीजीएम टेकिनकल्स ओमप्रकाश मालवीय, डायरेक्टर एच.एन. सिंह, जीएआई सी.बी. सिंह, सीएसआर ऑफिसर दीपक नागर, शासकीय माध्यमिक स्कूल, ग्राम सुलावड़ की प्राचार्य श्रीमति प्रतिभा वैद्य, प्रधानाध्यापक श्रीमति अपर्णा बड़ोदकर, उच्च श्रेणी शिक्षक राजेंद्र पाल सिंह डंग, सहायक शिक्षक इंदर सिंह राठौर, मुख्य सेवाकेन्द्र प्रेमनगर इंदौर पश्चिम क्षेत्र संचालिका ब्र.कु. शशि दीदी, बिजलपुर उप सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. यश्विनी बहन, स्थानीय उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रक्षा बहन, लोकमान्य नगर उप सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संगीता बहन, चाँदस पैलेस कॉलोनी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अर्चना बहन आदि उपस्थित रहे।



बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सुरक्षित भारत-सड़क सुरक्षा एवं कल्प तरु अभियान के तहत सरस्वती शिशु मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी, पूर्व प्रधानाचार्य बहन स्मृति भूंगी, प्रधानाचार्य शिवराम चौधरी, विद्युत उपभोक्ता फोरम के अध्यक्ष बी.एल. वर्मा, संदीप बलहाल, योग प्रशिक्षक राकेश भाई, ब्र.कु. प्रीति बहन, गौरी बहन, आचार्यगण व बड़ी संख्या में बच्चे उपस्थित रहे।



छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'कल्प तरु' परियोजना के तहत पेट्टिक टाउन में शांति पूर्वक रैली का आयोजन किया गया साथ ही पौधारोपण भी किया गया। इस मौके पर जनपद असिस्टेंट अकाउंटेंट श्रीराम चतुर्वेदी, आईटी इंजीनियर बृजेश मिश्रा, व्यापारी सावंत गुप्ता, व्यापारी महेंद्र चौरसिया, अंजू निरंजन, परमजीत कौर, कल्पना शर्मा, तनु गुप्ता, स्मृति यादव, ब्र.कु. भारती बहन तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



नांदेड़-महाराष्ट्र। शाश्वत यौगिक खेती का मॉडल देखने आए महाराष्ट्र के एग्रीकल्चर कमिश्नर धीरज कुमार, जिला कलेक्टर डॉ. विपिन विठ्ठल, जिला कृषि अध्यक्ष रविशंकर चलवदे, आत्मा संचालक सोनवणे मैडम एवं प्रतिष्ठित किसानों को महाराष्ट्र कृषिभूषण पुरस्कार प्राप्त राजयोगी ब्र.कु. भगवान इंगोले ने शाश्वत यौगिक खेती का बारीकी से अवलोकन कराते हुए कृषि अधिकारी को यौगिक खेती के क्या-क्या फायदे हैं, किसानों में क्या बदलाव आया, उत्पादन में क्या बदलाव आया इसकी रिपोर्ट काट व उसके मॉडल का रिपोर्ट सरकार को भेजने के लिए कहा।



रीवा-म.प्र। प्रख्यात जादूगर आनंद जी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सीगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रकाश भाई एवं ब्र.कु. सुभाष भाई।



ग्वालियर-म.प्र। भारत सरकार के सामाजिक न्याय अधिकारिता मंत्रालय नई दिल्ली से 'नरो से आजादी' राष्ट्रीय युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नगर निगम ग्वालियर के मुख्य बिल्डिंग में जनसुनवाई कक्ष में हुआ। इस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में भारत सरकार के माननीय केन्द्रीय मंत्री सामाजिक न्याय अधिकारिता मंत्रालय सहित देश भर के विश्व विद्यालयों से माननीय वाइस चांसलर, स्कूल कॉलेज के प्रिंसिपल एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। साथ ही ग्वालियर जिला प्रशासन सामाजिक न्याय एवं निःशक्तजन कल्याण विभाग से अनुज शिवहरे, बहन पूर्वी अग्रवाल, अहिंसा बाल कल्याण समिति के सदस्यगण, रमन शिक्षा समिति के सदस्यगण, स्कूल के छात्र-छात्राएं एवं ब्रह्माकुमारीज संस्थान से ब्र.कु. प्रहलाद सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

आवश्यक सूचना

ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी
आबूरोड, सिरौही,
राजस्थान में वाइस प्रिंसिपल (महिला/पुरुष) की आवश्यकता है।

योग्यता : मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. नर्सिंग
अनुभव : नर्सिंग स्कूल अथवा कॉलेज में कम से कम 5 वर्ष का शिक्षण अनुभव

संपर्क करें

मोबाइल नं. : 6361546493

ई.मेल : ghsn.abu@gmail.com

केले के पत्ते पर खाना खाने से होने वाले फायदे....

इससे पेट में मौजूद म्यूकस नर्म हो जाता है। जिससे पेट की समस्याओं से राहत मिलती है।

केला तो आप सभी ने खाया होगा। केला स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक होता है। आपने अक्सर देखा होगा कि अधिकतर लोग सुबह केला खाना पसंद करते हैं। क्या आप जानते हैं कि केले के अलावा उसके पत्तों का हमारे स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ता है! आपने साउथ में देखा होगा कि वहाँ केले के पत्तों पर खाना खाया जाता है। केले के पत्ते में पॉलीफेनॉल्स नाम का एंटी ऑक्सीडेंट होता है। जो शरीर में मौजूद फ्री रेडिकल्स से बचाने में मदद करता है। इसमें

स्वाद बढ़ जाता है : केले के पत्तों पर मोम की एक पतली परत होती है। जिसका स्वाद बहुत अलग होता है। गर्म खाना केले के पत्तों पर परोसा जाता है तो मोम खाने में पिघलकर मिल जाता है। इससे उसका स्वाद बढ़ जाता है।

पर्यावरण के लिए : आज के समय में पर्यावरण एक बड़ा मुद्दा है। आमतौर पर पार्टी में प्लास्टिक या स्टिरॉफोम के प्लेट्स का इस्तेमाल किया जाता है। खाने के बाद इन प्लेट्स को डीकंपोज करना मुश्किल होता है। आप इसकी बजाय केले के पत्ते का इस्तेमाल कर सकते हैं। केले के पत्ते में जगह ज़्यादा होती है तो आसानी से परोस सकते हैं। ये बहुत हाइजीनिक होता है।



मौजूद पोषक तत्व खाने-पीने की चीज़ों में आसानी से मिल जाता है। इसमें एंटी बैक्टीरियल गुण होते हैं जो खाने में मौजूद बैक्टीरिया को समाप्त करने में मदद करता है। इससे बीमार पड़ने की आशंका कम हो जाती है।

नैचुरल ब्लड विलिंगर : पारम्परिक तरीके से केले के पत्ते पर खाना खाने से नैचुरली रक्त का शुद्धिकरण करने में मदद करता है। यह खून में घुली अशुद्धियों को शरीर से बाहर फेंकता है।

डायजेशन : स्टडीज़ में ऐसा कहा गया है कि केले के पत्ते पर खाना खाने से भूख बढ़ती है। इससे पाचन क्रिया भी तेज़ होती है।

किडनी स्टोन्स : हरे ताजे केले के पत्ते पर खाना खाने से इम्यूनिटी बढ़ती है। इससे किडनी स्टोन्स से भी राहत मिलती है।

स्टमक अल्सर : पेट के अल्सर से राहत पाने में केले के पत्ते पर भोजन करना मददगार हो सकता है। दरअसल,

स्किन के लिए : केले के पत्ते पर भोजन करने से ब्लड प्यूरिफिकेशन जैसे प्रभाव डालता है, जिससे बॉडी को हेल्दी बनाने के अलावा स्किन प्रॉब्लम से बचने में भी सहायता होती है। केले के पत्ते में क्लोरोफिल होने से स्किन हेल्दी रहती है। ये तत्व इंस्टेडइनल (आंत) डिस्ऑर्डर का खतरा भी कम करती है।

केमिकल फ्री होता है : केले के पत्ते में किसी तरह का कोई केमिकल नहीं होता। जबकि प्लास्टिक की प्लेट में खाना परोसने से पिघली हुई प्लास्टिक का अंश हमारे पेट में जा सकता है जो कैंसर समेत अन्य बीमारियों का कारण बन सकता है। ऐसे में केले के पत्ते पर खाना स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है।

➤ केले के पत्ते के नुकसान

कुछ लोगों के केले के पत्ते पर खाना खाने से एलर्जी हो सकती है।

जैसा कि केले के पत्ते प्रकृति के सम्पर्क में रहते हैं। इसलिए, मिट्टी और प्रदूषण के कण इन पत्तों पर जमा हो सकते हैं। इसी तरह छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े और चींटियाँ भी इन पर चढ़ जाती हैं। इसीलिए, खाना परोसने से पहले आप उनको पानी से अच्छी तरह साफ करें और पोंछ लें।



अलीराजपुर-म.प्र.। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'खुशियों के रंग से रंगा, हर घर तिरंगा' अभियान के तहत आयोजित रैली का शुभारंभ स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी दीदी के द्वारा किया गया। इस रैली में जिला कलेक्टर, जिला विधायक, जिला एसपी, एसडीएम तथा अन्य नागरिकों सहित कार्यकारी जन शामिल रहे।



बार्शी-महारा.। ब्रह्माकुमारीज के विस्तारित नवनिर्मित भवन के उद्घाटन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, सोलापुर उपक्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. सोमप्रभा बहन, ब्र.कु. संगीता बहन, ब्र.कु. प्रताप भाई, ब्र.कु. मोहन भाई, अभियंता अमर काळे तथा अन्य।



रायपुर-छ.ग.। शांति सरोवर में आयोजित गहन योग साधना योगभट्टी के उद्घाटन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी। साथ हैं बायें से ब्र.कु. गीता दीदी, पार्षद अमर बंसल, ब्र.कु. सूर्य भाई तथा ब्र.कु. रूपेश भाई।



इंदौर-म.प्र.। मेडिकेप्स यूनिवर्सिटी में वृहद वृक्षारोपण के अवसर पर मेडिकेप्स यूनिवर्सिटी के चांसलर रमेश मित्तल ने यूनिवर्सिटी की ओर से राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी को तुलसी का पौधा एवं मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया।



ग्वालियर-लक्ष्कर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज माधौगंज के प्रभु उपहार भवन सेवाकेन्द्र में आयोजित 'आध्यात्मिकता द्वारा समाज को नई दिशा' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण भाई, इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर, निदेशक, ज्ञानमानसरोवर अकादमी, पानीपत, ब्र.कु. आदर्श दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. ज्योति बहन, श्रीमति आशा सिंह, राष्ट्रीय महिला जागरण प्रमुख, श्रीमति शकुंतला सिंह परिहार, पूर्व किशोर न्यायालय बोर्ड सदस्य, श्रीमति रानू नाहर, समाजसेवी, श्रीमति दीपिका जैन, संचालिका, आर्यन स्कूल एवं आर्यन कॉलेज तथा डॉ. वीरा लोहिया, निदेशक, जनक हॉस्पिटल, ग्वालियर।



भिलाई-छ.ग.। महात्मा गांधी कला मंदिर ऑडिटोरियम में भिलाई इस्पात संयंत्र के एक्जीक्यूटिव ऑफिसर्स के लिए 'कन्वर्सेशन ऑन लीडरशिप बीयोंड बाउंड्रीज द रोल ऑफ पेशेस इन ट्रांसफॉर्मेशनल लीडरशिप' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय वक्ता राजयोगिनी ब्र.कु. गोपी बहन, लंदन। कार्यक्रम में तपन सूत्रधार डीजीएम माईस, ए.के. बट्टा ईडी प्रोजेक्ट, अंजनी कुमार ईडी वर्क्स, के.के. सिंह ईडीपी एंड ए सहित एक्जीक्यूटिव ऑफिसर्स उपस्थित रहे।

क्या है अटैचमेंट और डिटैचमेंट



ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

है। फिर पता चल जायेगा हमें कि नॉर्मल क्या है, जब हम उसे फील करेंगे। रिश्ते कब नॉर्मल होते हैं अटैचमेंट में या डिटैचमेंट में! डिटैचमेंट फिजिकल नहीं है। डिटैचमेंट का मतलब ये नहीं है कि हम दूर-दूर हो जाते हैं एक-दूसरे से। हमें एक-दूसरे की परवाह नहीं रहती, ये डिटैचमेंट नहीं है। इनको कुछ फर्क ही नहीं

हम सभी अटैचमेंट को नॉर्मल कहते हैं लेकिन अटैचमेंट दर्द देती है। सिर्फ हमें ही नहीं देती सामने वाले को भी देती है। बहुत दर्द देती है। हमें लगा कि अटैचमेंट मिन्स लव। जहाँ बहुत प्यार है वहाँ हम कहते हैं कि हम एक-दूसरे से बहुत अटैच हैं। ये शब्द बोलना भी हमारे लिए अच्छा नहीं है और उनके लिए भी अच्छा नहीं है। क्योंकि अटैचमेंट मतलब क्या? अटैचमेंट मतलब मेरा मन उनके मन पर डिपेंडेंट (आधारित) हो गया है। जब भी हम किसी चीज पर डिपेंड होते जायेंगे, डिपेंडेंसी एक विकनेस (कमजोरी) है। अगर हमारे मन की स्थिति किसी के मन की स्थिति पर, व्यवहार पर डिपेंडेंट हो गई तो हर्ट होना नैचुरल है। तो वो हमारे अनुसार हमेशा परफेक्ट हो, ये नहीं हो सकता है। वो परफेक्ट हो सकते हैं लेकिन हमारे अनुसार नहीं।

अगर हमारे परिवार में किसी के जीवन में कोई बात आती है तो हम परेशान हो जाते हैं। कोई सही व्यवहार नहीं करता हम दुःखी हो जाते हैं। और फिर हम उनको क्या कहते हैं कि मैं आपसे अटैच हूँ ना तो बुरा तो लगेगा ही! ये लाइन को चेंज करना है क्योंकि जैसे ही मुझे बुरा लगा मैंने अपने रिश्ते पर घाव डाली है। क्योंकि मुझे बुरा लगा माना मैंने बुरी एनर्जी क्रियेट कर दी, क्योंकि मैं अटैच हूँ। अटैचमेंट नॉर्मल कैसे हो सकती है! डिपेंडेंसी नॉर्मल कैसे हो सकती है! एडिक्शन (लत) नॉर्मल कैसे हो सकती है! इन सब चीजों को हम हेल्दी कैसे कह सकते हैं!

डिटैचमेंट नॉर्मल है। अब हम डिटैचमेंट से डर जाते हैं, हमें डिटैचमेंट का मिनिंग समझना

पड़ता। हम कहते हैं ना कि इनको तो कुछ फर्क ही नहीं पड़ता। इसको तो कोई अपनी जिम्मेवारी ही नहीं है। ये केयरलेस (लापरवाह) है। हम कभी-कभी गलत शब्द यूज करते हैं। हम कहते हैं कि ये डिटैच हो गये। ये डिटैच नहीं हुए ये सिर्फ दूर हो गये हैं। दूर होना डिटैचमेंट नहीं है।

अटैचमेंट क्या है? जब हमारे मन की स्थिति दूसरों पर डिपेंडेंट हो जाती है, ये अटैचमेंट है। हम दूसरे देश में दूर रहकर भी अटैच हो सकते हैं। हम साथ-साथ बैठकर भी डिटैच हो सकते हैं। क्योंकि अटैचमेंट और डिटैचमेंट हमारे मन में है, आत्मा में है। तो अटैचमेंट मतलब मेरे मन की स्थिति उन पर निर्भर है। उधर अगर कुछ भी बदलेगा तो मैं यहाँ से (मन से) बदल जाऊंगी, ये अटैचमेंट है। तो जब ये अटैचमेंट होती है तो फिर हर्ट, रिजेक्शन, दुःख, दर्द क्रियेट होता है। तो वो एनर्जी क्रियेट होती है। बैटरी डिस्चार्ज होती है, वहाँ वायब्रेट होती है। वहाँ भी डिस्चार्ज होता है। रिश्ते में गाँठें बढ़ती जाती हैं। लेकिन डिटैचमेंट, डिटैचमेंट मतलब मेरे मन की स्थिति उनके ऊपर निर्भर नहीं है। इसका मतलब सामने वाला जो व्यवहार करे, जिस तरह से बात करे, न करे, मेरा ध्यान रखे या न रखे वो उनका व्यवहार है। लेकिन उनके व्यवहार में हम राय देंगे, गाइड करेंगे, इंस्ट्रक्ट करेंगे (शिक्षा देना), डिसिप्लिन (अनुशासन) करेंगे। बहुत जरूरी है डिसिप्लिन करना लेकिन हम उनके व्यवहार में डिस्टर्ब नहीं होंगे। इसका मतलब हम मन से डिटैच हैं। उनका व्यवहार मुख तक है उनका व्यवहार यहाँ (मन में) नहीं चल रहा

है। हम नहीं डिस्टर्ब हो रहे। अगर वो डिस्टर्ब हो रहे हैं, अगर उनकी लाइफ में कोई उतार-चढ़ाव आया है परिवार में होता है ना!

मान लो परिवार में किसी के जीवन में कोई उतार-चढ़ाव आये हैं। जब वो उतार-चढ़ाव आता है तो वो कभी-कभी थोड़ा-सा अपसैट हो जाते हैं। चिंता में हो जाते हैं तो उनको हमसे किस चीज की जरूरत है? शक्ति की जरूरत है, पॉवर की जरूरत है, लेकिन अगर हम अटैचड हैं उनसे ज्यादा चिंता तो हमें हो जाती है और जब हमें चिंता हो जायेगी तो हम मन में दर्द क्रियेट करेंगे और वो वहाँ वायब्रेट करेगा। तो फिर वो कहेंगे कि आप ना मुझसे थोड़ा दूर रहो। आप मुझे थोड़ा स्पेस दीजिए। मैं इस समय आपके साथ नहीं बैठ सकती। क्यों? हम तो आपके साथ बैठना चाहते हैं। कंफर्टेबल नहीं है हमारे साथ बैठने के लिए। क्योंकि उनको हमसे अच्छे वायब्रेशन नहीं मिल रहे। क्योंकि हमारे वायब्रेशन चिंता के हैं, क्योंकि हमारे वायब्रेशन दर्द के हैं और वो वायब्रेशन उनकी भी शक्ति घटा रहे हैं। इसलिए डिटैचमेंट रहने की प्रैक्टिस करना बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है।

डिटैचमेंट अनकंडीशनल (बिना शर्त) लव और एक्सेप्टेंस है। ये शब्द हमें कितना अच्छा लगता है अनकंडीशनल लव एंड अनकंडीशनल एक्सेप्टेंस (स्वीकार्य)। अच्छा लगता है ना कि मेरे से हर वक्त प्यार की एनर्जी वायब्रेट करती रहे। मेरे अन्दर कोई हर्ट, कोई दर्द नहीं आये क्योंकि मेरे से फिर वो चला जाता है। अनकंडीशनल लव मतलब वो कुछ भी करे बस मेरे से प्यार की एनर्जी रेंडिएट करनी चाहिए। हम कहते हैं कि हम उनसे प्यार करते हैं लेकिन हमसे सारा दिन प्यार की एनर्जी रेंडिएट नहीं होती है। क्योंकि हमसे वो रेंडिएट होगा जो मन में चलेगा। अगर मैं दो मिनट के लिए भी हर्ट हूँ तो दो मिनट के लिए मेरे से हर्ट की एनर्जी रेंडिएट हो रही है। तो अनकंडीशनल लव, जब हम यहाँ मन से परफेक्ट होंगे तब अनकंडीशनल लव और अनकंडीशनल एक्सेप्टेंस है। और यहाँ परफेक्ट होने के लिए अनकंडीशनल लव रेंडिएट करने के लिए इसको उधर से डिचैटड होना पड़ेगा।

- शेष पेज 9 पर



विजयवाड़ा-आ.प्र.। राज भवन में राज्यपाल बिस्व भूषण हरिचंदन को राजयोगिनी ब्र.कु. शान्ता दीदी व ब्र.कु. पद्मजा बहन ने रक्षासूत्र बांधा। इसके साथ ही दीदी ने राज्यपाल को माउण्ट आबू में होने वाले 'ग्लोबल सम्मिट' में आने का निमंत्रण भी दिया।



येवला-महा। माननीय मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के चार दिवसीय दौरे के दौरान रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् येवला में ईश्वरीय सौगात भेंट कर उनका स्वागत व सम्मान करते हुए ब्र.कु. सरला बहन। इस मौके पर ब्र.कु. नीता बहन व ब्र.कु. अनुराधा बहन भी उपस्थित रहे।



नई दिल्ली। यूनिनियन मिनिस्टर फॉर कल्चर, टूरिज्म एंड डोनर किशन रेड्डी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शिविका बहन, माउण्ट आबू।



अमरावती-महा। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित पाँच दिवसीय राजयोग शिविर के उद्घाटन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अमरावती की सांसद नवनीत कौर राणा, बडनेरा निर्वाचन क्षेत्र के विधायक रवि भाउ राणा, नगरसेवक श्रीचंद तेजवानी, रघुवीर प्रतिष्ठान के संचालक दिलीप भाउ पोपट, डॉ. गणेश खारकर, ब्र.कु. प्रो. ई.वी. गिरीश, ब्रह्माकुमारीज की जिला संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सीता दीदी, ब्र.कु. रोहिणी बहन, ब्र.कु. डॉ. विशाल तापडीया सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। 'कल्प-तरू' अभियान के तहत मंदिर आटरा सरकार के परिसर में वृक्षारोपण किया गया। इस मौके पर संत रामदयाल जी, संत तेजराज जी, संत लाल जी, ब्र.कु.भारती बहन, ब्र.कु.कपिल, ब्र.कु.कैलाश आदि शामिल रहे।

चुनौतियों का सामना...

- पेज 4 का शेष

अगर बाबा ही नीचे आता रहेगा तो स्थिति कभी नहीं बनेगी। इसलिए बाबा ने कहा था, बच्चे आप ऊपर आओ और आप ऊपर आयेंगे तो आपकी स्थिति बनती जायेगी। फरिश्ते स्थिति बनेगी, वहाँ से निराकारी स्टेज में जाना आसान होगा क्योंकि ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता। तो ब्राह्मण सो फरिश्ता बनना है। लेकिन माया अपना पौंड्रक का रूप धारण करके आयेंगी। अगर पहचाना नहीं तो क्या होगा? खींच ले जायेगी। और जब लास्ट में सत्यता सामने आयेंगी तब कितना पश्चाताप होगा सोचने की बात है! ये सबसे बड़ी चुनौती आज हर एक ब्राह्मण के सामने है कि आपके पास भी लोग आयेंगे कि बाबा ने तीसरा रथ लिया है, वहाँ बहुत अच्छी पालना बाबा दे रहे हैं, वहाँ चलो। माया खींचेगी बहुत जोर से तो क्या करेंगे? अरे माया को थपड़ मारो अभी। बाप को अपनी पीठ नहीं दिखाओ। हम सच्चे हीरे हैं बाबा के। और सच्चे हीरे कभी बाबा को पीठ नहीं दिखा सकते। माया को अभी तलाक देना है, बाबा को तलाक देने का विचार भी नहीं आना चाहिए। ये है निश्चय बुद्धि विजयन्ती। और सबसे बड़ी बात अगर भगवान को तीसरा रथ लेना था तो लास्ट में 2017 में बाबा से पूछा गया कि बाबा अभी आगे? बाबा ने कहा समाप्ति वर्ष। नहीं तो बाबा उसी समय बता देता कि तीसरा रथ अब ये होगा। लेकिन नहीं कहा, समाप्ति कर दिया बाबा ने। और तब से ही बाबा का अव्यक्त पार्ट हो गया था। बाबा ने जो समय दिया है अभी भी थोड़ी कमी-कमजोरी अपने में है, उसको पुरुषार्थ करके बाबा की लिफ्ट की गिफ्ट लेकर उन्हें निकालें। माया के इस भ्रम में कभी फँसना नहीं है। परखने की शक्ति को बढ़ाकर आगे बढ़ें, इनके पीछे अपनी जीवन को नष्ट नहीं करना है। ठीक है? याद रखेंगे?



खरगोन-अन्नपूर्णा नगर(म.प्र.)। पवित्र नगरी मण्डलेश्वर में कावड़ यात्री विधायक एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री बहन विजय लक्ष्मी साथी सहित अन्य कावड़ यात्रियों का ब्रह्माकुमारीज की ओर से ब्र.कु. मंगला बहन, ब्र.कु. बसु बहन एवं अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों ने स्वागत किया।



वटवा-गुज.। वटवा पुलिस स्टेशन में रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तारा बहन, पुलिस इंस्पेक्टर कुलदीप गढ़वी तथा पुलिस स्टेशन के कर्मचारी।

परमात्म ऊर्जा

कथा सरिता



निकाल

लुं। किंतु फिर

उसे लगा कि ये तो राजा का मंत्री है। जब राजा स्वयं मेरे घर भोजन करने पधारेंगे, तब अपना कीमती पात्र निकालूंगा।

कुछ दिनों के बाद स्वयं राजा उसके घर भोजन के

के पड़ा रहा। एक दिन बूढ़े व्यक्ति की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद उसके बेटे ने उसका संदूक खोला। उसमें उसे काला पड़ चुका चांदी का पात्र मिला। उसने वह पात्र अपनी पत्नी को दिखाया और पूछा, “इसका

वस्तु का मूल्य कब!



क्या करें?” पत्नी ने काले पड़ चुके पात्र को देखा और मुँह बनाते हुए बोली, “अरे इसका क्या करना है। कितना गंदा पात्र है। इसे कुत्ते को भोजन देने के लिए निकाल लो।”

उस दिन के बाद से घर का पालतू कुत्ता उस चांदी के पात्र में भोजन करने लगा। जिस पात्र को बूढ़े व्यक्ति ने जीवन भर किसी विशेष व्यक्ति के लिए संभालकर रखा, अंततः उसकी ये गत हुई।

सीख : किसी वस्तु का मूल्य तभी है, जब वह उपयोग में लाई जा सके। बिना उपयोग के बेकार पड़ी कीमती वस्तुओं का भी कोई मूल्य नहीं। इसलिए यदि आपके पास कोई वस्तु है, तो यथा समय उसका उपयोग कर लें।

लिए पधारे। राजा उसी समय पड़ोसी राज्य से युद्ध हार गए थे और उनके राज्य के कुछ हिस्से पर पड़ोसी राजा ने कब्जा कर लिया था। भोजन परोसते समय बूढ़े व्यक्ति ने सोचा कि अभी-अभी हुई पराजय से राजा का गौरव कम हो गया है। मेरे पात्र में किसी गौरवशाली व्यक्ति को ही भोजन करना चाहिए। इसलिए उसने चांदी का पात्र नहीं निकाला।

इस तरह उसका पात्र बिना उपयोग

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक बूढ़ा व्यक्ति रहता था। उसके दो बेटे थे। बूढ़ा वस्तुओं के उपयोग के मामले में कंजूस था और उन्हें बचा-बचा कर उपयोग किया करता था। उसके पास एक पुराना चांदी का पात्र था। वह उसकी सबसे मूल्यवान वस्तु थी। वह उसे संभालकर

संदूक में बंद कर रखता था। उसने सोच रखा था कि सही अवसर आने पर ही उसका उपयोग करेगा।

एक दिन उसके यहाँ एक संत आये। जब उन्हें भोजन परोसा जाने लगा, तो एक क्षण को बूढ़े व्यक्ति के मन में विचार आया कि क्यों न संत को चांदी के पात्र में भोजन परोसूँ? लेकिन अगले ही क्षण उसने सोचा कि मेरा चांदी का पात्र बहुत कीमती है। गाँव-गाँव भटकने वाले एक संत के लिए उसे क्या निकालना! जब कोई राजसी व्यक्ति मेरे घर पधारेगा, तब यह पात्र निकालूंगा। यह सोचकर उसने पात्र नहीं निकाला। कुछ दिनों बाद उसके घर राजा का मंत्री भोजन करने आया। उस समय भी बूढ़े व्यक्ति ने सोचा कि चांदी का पात्र

गाँव के पनघट पर चार औरतें पानी भरने आईं। पानी भरते-भरते वे एक-दूसरे से बातें करने लगीं। चारों के एक-एक पुत्र थे। बातों-बातों में उन्होंने अपने पुत्रों के गुणों का बखान करना प्रारंभ कर दिया। पहली औरत बोली, “मेरा पुत्र बहुत सुरीली बांसुरी बजाता है। जो भी उसकी बांसुरी सुनता है मंत्रमुग्ध हो जाता है। मैं ऐसा गुणवान पुत्र पाकर बहुत प्रसन्न हूँ।”

दूसरी औरत बोली, “मेरा पुत्र बहुत बड़ा पहलवान है। इस गाँव में ही नहीं, बल्कि दूर-दूर के गाँव में उसकी बहादुरी का डंका बजता है। ऐसा गुणवान पुत्र भगवान सबको दें।”

तीसरी औरत कहाँ पीछे रहती, वह बोली, “मेरा पुत्र कुशाग्र बुद्धि है। उससे अधिक बुद्धिमान इस पूरे गाँव में नहीं। लोग अपनी समस्याएँ लेकर उसके पास आते हैं। मैं ऐसा पुत्र पाकर धन्य हो गई।”

चौथी औरत ने सबकी बातें सुनी, लेकिन कहा कुछ भी नहीं। इस पर वे औरतें उससे कहने लगी, “बहन! तुम भी तो कुछ कहो ना! तुम्हारे पुत्र में क्या गुण हैं? कोई न कोई गुण तो उसमें अवश्य होगा।” वह औरत बोली, “क्या कहूँ बहनों? मेरे पुत्र में तुम्हारे पुत्रों की तरह कोई गुण नहीं है।” उसकी बात

सुनकर तीनों औरतों ने गर्व में अपना सिर उठा लिया। कुछ देर में सबने पानी भर लिया और वापस जाने के लिए अपना-अपना घड़ा उठाने लगी। उसी समय पहली औरत का पुत्र हाथ में बांसुरी लिए वहाँ से गुजरा, उसने देखा कि उसकी माँ पानी से भरा घड़ा नहीं उठा पा रही है, किंतु वह यह अनेदखा कर बांसुरी बजाते हुए वहाँ से चला गया।

बाद भी उसके पास नहीं आया और अपनी कसरत में लगा रहा।

तीसरी औरत का पुत्र भी वहाँ से किताब पढ़ते हुए निकला। उसकी माँ ने उससे कहा, “पुत्र! मैं दोनों हाथों से घड़ा पकड़े हुए हूँ। ये रस्सी जरा मेरे कंधे पर डाल दे।” लेकिन वह अपनी माँ की बात अनसुनी कर वहाँ से चला गया। तभी चौथी औरत का पुत्र वहाँ आया। अपनी माँ के सिर पर घड़ा देख वह उसके पास

गुणवान कौन?



गया और उसके सिर पर से घड़ा उतारकर अपने सिर पर रखकर चलने लगा। कुएं के पास बैठी एक बुढ़िया यह सब देख-सुन रही थी। वह बोल पड़ी, “मुझे तो यहाँ बस एक ही गुणवान पुत्र नजर आ रहा है। वही जो अपने सिर पर घड़ा लिए जा रहा है। माता-पिता की सेवा करने वाले पुत्र से गुणवान पुत्र भला कौन हो सकता है।”

सीख : गुणवान वही है, जो अपने माता-पिता की सेवा करे और साथ ही सबकी सहायता के लिए तत्पर रहे।

सेवा का सम्बन्ध अर्थात् त्याग और तपस्वी रूप। सच्ची सेवा के लक्षण यही त्याग और तपस्या है। ऐसे ही व्यवहार में भी डायरेक्शन प्रमाण निमित्त मात्र शरीर निर्वाह लेकिन मूल आधार आत्मा का निर्वाह, शरीर निर्वाह के पीछे आत्मा निर्वाह भूल नहीं जाना चाहिए। व्यवहार करते शरीर निर्वाह और आत्म निर्वाह दोनों का बैलेंस हो। नहीं तो व्यवहार माया जाल बन जायेगा। ऐसी जाल जो जितना बढ़ाते जायेंगे उतना फंसते जायेंगे। धन की वृद्धि करते हुए भी याद की विधि भूलनी नहीं चाहिए। याद की विधि और धन की वृद्धि दोनों साथ-साथ होनी चाहिए। धन की वृद्धि के पीछे विधि को छोड़ नहीं देना है। इसको कहा जाता है लौकिक स्थूल कर्म भी कर्मयोगी की स्टेज में परिवर्तन करो। सिर्फ कर्म करने वाले नहीं लेकिन कर्मयोगी हो।

कर्म अर्थात् व्यवहार योग अर्थात् परमार्थ। परमार्थ अर्थात् परमपिता की सेवा अर्थ कर रहे हैं। तो व्यवहार और परमार्थ दोनों साथ साथ रहें। इसको कहा जाता है श्रीमत पर चलने वाले कर्मयोगी। व्यवहार के समय परिवर्तन क्या करना है? मैं सिर्फ व्यवहारी नहीं लेकिन व्यवहारी और परमार्थी अर्थात् जो कर रहा हूँ वह ईश्वरीय सेवा अर्थ कर रहा हूँ। व्यवहारी और परमार्थी कम्बाईड हैं। यही परिवर्तन संकल्प सदा स्मृति में रहे तो मन और तन डबल कमाई करते रहेंगे। स्थूल धन भी आता रहेगा। और मन से अविनाशी धन भी जमा होता रहेगा। एक ही तन द्वारा एक ही समय मन और धन की डबल कमाई होती रहेगी। तो सदा यह याद रहे कि डबल कमाई करने वाला हूँ। इस ईश्वरीय सेवा में सदा निमित्त मात्र का मंत्र व करनहार की स्मृति का संकल्प सदा याद रहे। करानहार भूले नहीं। तो सेवा में सदा निर्माण ही निर्माण करते

रहेंगे। आगे चलो, आगे चल अनेक प्रकार के व्यक्ति और वैभव अनेक प्रकार की वस्तुओं से सम्पर्क करते हो। इसमें भी सदा व्यक्ति में व्यक्त भाव के बजाए आत्मिक भाव धारण करो। वस्तुओं व वैभवों में अनासक्त भाव धारण करो तो वैभव और वस्तु अनासक्त के आगे दासी के रूप में होगी और आसक्त भाव वाले के आगे चुम्बक की तरह फंसाने वाली होगी। जो छुड़ाना चाहो तो भी छूट नहीं सकते। इसलिए व्यक्ति और वैभव में आत्म भाव और अनासक्त भाव का परिवर्तन करो।

कोई भी पुरानी दुनिया के आकर्षणमय दृश्य अल्पकाल के सुख के साधन यूज करते हो व देखते हो तो उन साधनों व दृश्य को देख कहाँ-कहाँ साधना को भूल साधन में आ जाते हो। साधनों के वशीभूत हो जाते हो। साधनों के आधार पर साधना - ऐसे समझो जैसे रेत के फाउंडेशन के ऊपर बिल्डिंग खड़ी कर रहे हो। उसका क्या हाल होगा? बार-बार हलचल में डगमग होंगे। गिरा कि गिरा यही हालत होगी। इसलिए यही परिवर्तन करो कि साधन विनाशी और साधना अविनाशी। विनाशी साधन के आधार पर अविनाशी साधना हो नहीं सकती। साधन निमित्त मात्र हैं, साधना निर्माण का आधार है। तो साधन को महत्त्व नहीं दो, साधना को महत्त्व दो। तो सदा ये समझो कि मैं सिद्धि स्वरूप हूँ न कि साधन स्वरूप। साधना सिद्धि को प्राप्त कराएगी। साधनों की आकर्षण में सिद्धि स्वरूप को नहीं भूल जाओ। हर लौकिक चीज को देख, लौकिक बातों को सुन, लौकिक दृश्य को देख, लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करो अर्थात् ज्ञान स्वरूप हो हर बात से ज्ञान उठाओ। बात में नहीं जाओ, ज्ञान में जाओ तो समझा, क्या परिवर्तन करना है!

गलती होना वास्तव में इतनी बड़ी गलती नहीं, किंतु उसे महसूस न करना उससे भी बड़ी गलती

अलीराजपुर-म.प्र.। गलती होना वास्तव में गलती तो है पर इतनी बड़ी नहीं, परंतु अपनी गलती को महसूस न करना यह उससे भी भारी गलती है। महसूस नहीं किया तो स्वयं के बदलने के द्वार बंद हो जाते हैं। सच्चे दिल से माफी मांगने का अर्थ है कि हम उस गलती

दूसरे को नीचा दिखाना चाहता है तो इस प्रयास में वह खुद भी नीचे उतर जाता है। दूसरी ओर क्षमा करके व्यक्ति स्वयं भी ऊँचा उठता है और सामने वाले को भी ऊँचा उठने की प्रेरणा देता है। यदि चित्त में ईर्ष्या, घृणा, द्वेष की अग्नि धधक रही है तो वह चित्त को भारी कर देगी।

की हमारे मन की धारणा ही मन को शांत करेगी, जिससे हमारी पढ़ाई एकाग्र वृत्ति से हो सकेगी और हमारी सफलता शत प्रतिशत निश्चित हो जाएगी।

स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी बहन ने जीव घात महापाप विषय पर सम्बोधित करते हुए कहा कि जीवघात करना अर्थात् परिस्थितियों से मुख मोड़ना। जीवघात करने से शरीर तो छूट जाता है परंतु हिसाब-किताब आत्मा में ज्यों का त्यों बना रहता है। आत्मा जहाँ भी जाएं, कर्मों के बंधन, संस्कारों के बंधन उसके साथ ही रहते हैं। अतः परिस्थितियों से मुख मोड़कर जीवघात करना बहादुरी नहीं कमजोरी है। उन्होंने बताया कि जीवघात होते ही आत्मा सूक्ष्म शरीर के साथ स्थूल शरीर से अलग हो जाती है। वह खुद के मृत शरीर को देख पश्चाताप करती है परंतु तब तक शरीर की नस नाड़ी सब जवाब दे चुके होते हैं, इसलिए शरीर में दोबारा प्रवेश करने में असफल रहती है।

ब्लॉक ऑफिसर रामानुज शर्मा ने बताया कि शैक्षणिक कार्य में ध्यान, योग, प्रार्थना का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ध्यान हमारे मन की शांत अवस्था पर निर्भर करता है। कार्यक्रम में होस्टल वार्डन शोभा शर्मा, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. अर्जुन भाई आदि उपस्थित रहे।



को इतनी गहराई से महसूस करें कि दोबारा कभी भी किसी के साथ वो गलती ना दोहराएं। उक्त विचार इंदौर से आए जीवन जीने की कला के प्रणेता ब्र.कु. नारायण भाई ने शासकीय कन्या शिक्षा परिसर सोंडवा में छात्राओं को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि अगर एक व्यक्ति बदला लेकर

ऐसा बोझिल मन भगवान के किस काम का जो पहले से ही भरा है, भगवान उसमें और क्या भरेंगे! इसलिए प्रतिदिन अपनी गलती के लिए क्षमा मांग कर और दूसरों की गलती के लिए क्षमा देकर मन को खाली अवश्य कर लीजिये तभी शान्ति के सागर परमात्मा की शान्ति की किरणें अंदर प्रवेश करेंगी। इस तरह



रीवा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के शांति धाम सेवाकेन्द्र में आजादी के अमृत महोत्सव के तहत जिले के नवनिर्वाचित 50 से अधिक सरपंच एवं उपसरपंच के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में सभी का सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी।



मंदसौर-म.प्र.। 'कल्प तरु' प्रोजेक्ट के तहत ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर 150 पौधे लगाये गये। इस अवसर पर जिला सहकारी बैंक के पूर्व अध्यक्ष मदनलाल राठौर तथा अन्य गणमान्य नागरिकों सहित सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उषा बहन, ब्र.कु. श्यामा बहन, ब्र.कु. हेमलता बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

क्या है अटैचमेंट और...

- पेज 7 का शेष

यानी मेरा मन किसी और पर निर्भर नहीं है। आत्म निर्भर मतलब मैं आत्मा किसी पर निर्भर नहीं हूँ इमोशनली (भावुकतापूर्वक)।

इंडिपेंडेंट- इंडिपेंडेंट इज डिटैचमेंट, मन से स्वतंत्र। मन में जो भी चल रहा है वो मेरी च्वाइस से चल रहा है। ऐसे नहीं कि कोई भी आया, किसी ने कुछ कहा तो मैं प्रभावित हो गई। अटैचमेंट हमारी सिर्फ परिवार से नहीं होती है। हमें लगता है कि हम परिवार से बहुत अटैचड हैं, फ्रेंड्स से बहुत अटैचड हैं, नहीं। अटैच तो हम बहुत लोगों से हैं, अटैच तो हम बहुत बातों से हैं जिस-जिस चीज का प्रभाव मन पर पड़ जाता है हम उस-उस से अटैच हैं। कोई भी सीन से हम डिस्टर्ब होते हैं तो हम उससे अटैचड हैं। आप ट्रैफिक में अटक जाते हैं 2 मिनट के लिए, सामने वाला गाड़ी गलत तरह से चला रहा है और हॉर्न बहुत बजा रहा है हम परेशान हो गये, उस क्षण के लिए हम उससे अटैच हो गये क्योंकि उसके बिहेवियर (व्यवहार) ने हमारे मन पर असर डाल दिया। मतलब मेरा मन उसके बिहेवियर से अटैच था उस टाइम। ये अटैचमेंट है। हमें डिटैच होना है वो गलत गाड़ी चला रहे हैं, वो हॉर्न ज्यादा बजा रहे हैं हम उसको राय दे सकते हैं अगर दे सकते हैं तो! नहीं हम यहाँ स्थिर हैं ये है डिटैचमेंट। फिर वो चाहे सड़क पर अनजान है या फिर हमारे परिवार का कोई सदस्य है, बच्चा है, क्लीग है, स्पाउस है, क्लाईंट है वो उनका व्यवहार, उनका संस्कार यदि हम स्टेबल हैं, पॉवरफुल हैं, डिटैच हैं, अनकंडीशनली गिविंग हैं तो रिश्ता मन से ब्यूटीफुल (सुन्दर) होगा और जब रिश्ता मन से ब्यूटीफुल होगा तो यहाँ (मन) हमेशा स्टॉन होगा। चाहे कितनी भी बातें बाहर आ जायें, चाहे कितने प्रेशर क्रियेट हो जायें यहाँ (मन की) अगर बैटरी चार्जड है और यहाँ तब होगी जब हम बैटरी को डेली बेसिस (दैनिक आधार) पर चार्ज करेंगे।



इंदौर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के छावनी सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'नवनिर्वाचित पार्षद सम्मान समारोह' में नगर पालिका निगम के क्षेत्रीय विजयी पार्षद वार्ड क्रमांक 63 से मुडल अग्रवाल, वार्ड क्रमांक 64 से पार्षद काउंसलर मनीष शर्मा, वार्ड क्रमांक 55 से पंखुड़ी जैन, विद्या नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम बहन, समाजसेवी अभिषेक अग्रवाल एवं आशीष दुबे, पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन्स क्लब ब्र.कु. रतनलाल गुप्ता आदि उपस्थित रहे।



उज्जैन-म.प्र.। 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' मानवता के लिए योग कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए अंतर्राष्ट्रीय वक्ता अरुण ऋषि, योगा लाइफ सोसायटी अध्यक्ष गिरजेश व्यास, पतंजलि योगाचार्य डॉ. किशोर सोनी, ब्र.कु. उषा दीदी तथा अन्य।



पन्ना-म.प्र.। बृजेंद्र प्रताप सिंह, खनन एवं श्रम विभाग राज्यमंत्री, डॉ. वी.एस. उपाध्याय, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, डॉ. एल.के. तिवारी, सिविल सर्जन, विनोद तिवारी, एडवोकेट, श्रीमति आशा गुप्ता, पार्षद सहित अन्य गणमान्य अतिथियों को व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी का अवलोकन कराते हुए ब्र.कु. बहनें।



रायपुर से.20-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज के शान्ति शिखर रिट्रीट सेंटर में 'आध्यात्मिकता द्वारा जीवन में मूल्यों की रक्षा' विषय पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए गृह सचिव अरुण देव गौतम, क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी, राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. रश्मि दीदी तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।



नवसारी-गुज.। सेवाकेन्द्र पर आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में जिला यातायात पीएसआई डॉ. जागृत जोशी, ट्रैफिक ब्रिगेड ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं सर्वकाली समाचार पत्र के संपादक गौतम मेहता, चेम्बर ऑफ कॉमर्स मंत्री एवं न्यू इंडिया बेकरी के मालिक हरीश भाई, ब्र.कु. गीता बहन सहित शहर के लगभग 100 गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



खजुराहो-म.प्र.। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'सम्बंधों में समरसता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में खजुराहो की महारानी साहिबा बहन कविता सिंह, एयरपोर्ट डायरेक्टर प्रदीप कुमार वैज, पुरातत्व विभाग के अधिकारी शुभम अरजरिया, पत्रकार बंधु, समाजसेवी भाजपा मंडल उपाध्यक्ष कमलेश उपाध्याय, होटल एसोसिएशन से अविनाश तिवारी, व्यापार संगठन से संतोष गुप्ता, केबल ऑपरेटर प्रेम चंद सोनी, योगेन्द्र शुक्ला, मुख्य वक्ता पानीपत से ज्ञान मानसरोवर के डायरेक्टर, हरियाणा सरकार द्वारा सम्मानित, साइटेस्ट एवं इंजीनियरिंग विंग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. भारत भूषण भाई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या बहन आदि उपस्थित रहे।



व्यारा-गुज.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा नगरपालिका सफाई कर्मचारियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. दीपा बहन, ब्र.कु. जागृति बहन तथा सफाई कर्मचारी।



सारणी-म.प्र.। सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारणी में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम में मुख्य वक्ता राजयोगी ब्र.कु. रामप्रकाश सिंघल, न्यूयॉर्क, आर.के. गुप्ता, मुख्य अभियंता, उत्पादन, एमपीपीजीसीएल, रोशन जैन, एसडीओपी, गिरीश पालन, शाखा प्रमुख, एसबीआई, सुंदरलाल बत्रा, व्यापारी संघ, ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. नंदकिशोर भाई, ब्र.कु. राम भाई आदि उपस्थित रहे।

आप सुबह-सुबह उठे और आपने अपना दरवाजा खोला, सामने आपके कोई खड़ा है। आपने पूछा आप कौन? इसको थोड़ा-सा गहराई से सोचें कि सामने अब दरवाजा खटखटाने वाला कोई इंसान ही होगा, कोई व्यक्ति होगा, कोई जानवर तो नहीं होगा! लेकिन हमारे मुँह से ऐसे निकलता है जैसे हम ऐसे स्थान से हैं, ऐसे ग्रह से हैं, ऐसे प्लैनेट से हैं जैसे सामने कौन आ गया! भाई व्यक्ति ही तो है, लेकिन पहचान के कारण हम पूछते हैं। इससे एक बात सामने आ गई, गहराई वाली बड़ी बात है, समझने वाली बात है कि इसका मतलब व्यक्ति स्वयं को अगर पहचान जाये तो सामने वाला ऐसा प्रश्न नहीं पूछ सकता कि आप कौन? उसका लहजा बदल जायेगा, उसका तरीका बदल जायेगा वो पूछेगा कि हाँ जी बताइये ये भी तो हो सकता है! लेकिन सबसे बड़ी उलझन, एक सबसे बड़ी समस्या हमारे लिए है कि हम खुद को अगर इतना गहराई से पहचान जाते हैं तो कभी भी इतना व्यक्ति को पहचानने में देरी नहीं लगती।

आज व्यक्ति का मूल्य पूरी तरह से खत्म हो गया है। लोगों को लगता है व्यक्ति, व्यक्ति को नहीं पहचान रहा लेकिन एक उदाहरण आप ले लें जैसे किसी एरिया में आपको प्लैट खरीदना है और आप जब जाकर उस प्लैट का पता करते हैं कि कितने प्लैट बिक गये हैं उसके अनुसार आप प्लैट खरीदते हैं। तो इसका मतलब प्लैट की वैल्यू है या व्यक्ति की वैल्यू है! अगर आपका ही एक प्लैट हो और उसमें कोई नहीं रहता हो, तो क्या आप रह पायेंगे वहाँ पर? ये बात क्या सिद्ध कर रही है कि आज मनुष्य की कीमत पूरी तरह से घट गई, लेकिन अगर मनुष्य न हो तो प्लैट की भी कीमत नहीं। क्योंकि

उसमें रहने वाला ज़्यादा मूल्यवान है। इसी तरह हमारे अन्दर एक शक्ति है जो बहुत मूल्यवान है। जो इस मकान के अन्दर रह रहा है। अगर वो निकल जायेगा तो इस शरीर की भी वैल्यू नहीं है। तो व्यक्ति का मतलब यहाँ जैसे खुद को इम्पोर्टन्स (महत्व) देने की बात है, खुद को समझने की बात है

तो हम समस्या खुद का खुद से ही हैं। कोई दूसरा हमारे लिए समस्या नहीं बन रहा। सबसे पहले बात आती है कि हमारा जो समाज है, समाज में हरेक व्यक्ति का अपना एक दायरा है। और हर समय कोई भी ऐसा गार्डियन या कोई भी ऐसा आदर्श, या कोई ऐसा व्यक्ति आपके पास मौजूद नहीं होगा जिससे आप हर प्रश्न का उत्तर लेंगे, लेकिन प्रश्न का उत्तर अगर खुद से खुद में ढूँढा जाये तो शायद उससे बेहतर जवाब नहीं हो सकता। इसलिए सबसे पहले समस्या और सबसे पहले समाधान स्वयं का स्वयं से है कि जब हमारे प्रश्न उलझा देते हैं हमको, हमारे भाव अपने लिए बदल गये, परिस्थिति के लिए बदल गये, दुनिया के लिए बदल गये इसलिए शायद हमारे पास इतनी सारी समस्याएँ हैं। समस्या का मात्र एक कारण है वो है उलझन। कौन-सी उलझन, जितनी भी बाहर

की आकर्षण हैं, बाहर की बातें हैं, प्रकृति के जो बन्धन हैं उनसे उलझन, उसमें उलझने के ही कारण आज हम समस्याओं में धिरे हैं। तो पहला समाधान ये कि सारी चीजें हमारे यूज के लिए, प्रयोग के लिए हैं, हमारे लिए प्रयोग करने के लिए हैं, फँसने के लिए नहीं हैं,



समाधान स्वरूप कैसे बनें?

इससे हम आराम से बाहर निकल सकते हैं। दूसरा जो व्यक्ति जैसा होता है वो सामने वाले को वैसा बनाता है। तो हमारा पहला समाधान तो ये निकल गया कि हम सामान के बीच में हैं, सामानों को यूज भी कर रहे हैं और बिल्कुल फँस भी नहीं रहे हैं। तो समाधान तो शुरू हो गया। तो मैं समस्या पैदा करने वाला नहीं, समाधान पैदा करने वाला बन गया। अब मेरे सामने जो भी आयेगा

चाहे वो जैसा भी हो, जिस भी फॉर्म में आये, जिस भी पद पोजिशन से आये वो भी उसी उलझन से आया है जिस उलझन में हम लोगों को उलझा हुआ देख रहे हैं। जब वो आपके सामने आयेगा और आपको देखेगा कि आप कैसे इससे निजात पाके, पूरी तरह से सक्षम होके और पूरी तरह से सबके सामने उस अंदाज़ में जी रहे हैं जैसे कभी किसी ने सोचा भी नहीं होगा। तो ऐसे परमात्मा के बच्चे होने के बाद, समाधान स्वरूप होने के बाद सामने जो भी आयेगा वो आपको देखकर समाधान को ढूँढ लेगा। कहते हैं ना जैसा टीचर वैसा स्टूडेंट। तो अगर टीचर हरेक बात को अच्छी तरह से समझता है तो सामने वाले को अच्छा समझा सकता है। तो समाधान स्वरूप बनने का पहला और सबसे सुन्दर स्टेप (कदम) है खुद पर इतना काम करो, इतना काम करो कि आपको शरीर की समझ आ जाये, शरीर से सम्बन्धित चीजों की समझ आ जाये, बाहरी दुनिया की समझ आ जाये, चारों

तरफ घटने वाली घटनाओं की समझ आ जाये। इतनी समझ आ जाये कि आपको समझ के कारण आपके वायब्रेशन ही सामने वाले को ठीक कर देंगे। तो इस तरह से आप अपने आप को जोड़ सकते हैं, देख सकते हैं और दूसरों को इसी हिसाब से दे भी सकते हैं।

इसका दूसरा एक बहुत ही सुन्दर उम्दा (बेहतरीन) कारण जो हमको लगता

है, हो सकता है ये आपका कारण भी हो लेकिन ये हमारा खुद का निजी अनुभव है कि जितने भी आज तक शास्त्रों में बातें लिखी गईं या चारों तरफ हम जो पढ़ते या सुनते हैं उन सभी बातों में एक बात कॉमन-सी है वो कॉमन बात है कि ये सब तो नैचुरल है। सबकुछ सामान्य है।

दुःख-सुख तो मनुष्य की नेचर है। ऐसा नहीं है। अगर हमारी नेचर दुःख लेने की होती ना तो हम कभी भी सुख के आने पर इतने खुश नहीं होते और दुःख के आने पर इतने दुःखी नहीं होते। इसलिए मनुष्य की सोच के दायरे को भी तोड़ना है। उसको हमें वो देना है जो हम समझते हैं। ये है समाधान स्वरूप बनने का मतलब। जो लोगों के अनुभव हैं वो अनुभव सही नहीं हैं। इस अनुभव को अपने अन्दर डालना तो कैसे आता है जब हमारा पूरा वायब्रेशन बदल जायेगा। तो हमारे एक-एक संकल्प से समाधान निकलेगा। हम सारे जितनी भी मान्यताएँ हैं, जितनी भी धारणाएँ हैं उनको समझके तोड़ते जायेंगे तो समाधान स्वरूप बनते जायेंगे। और वो समाधान स्वरूप बनने में हो सकता है थोड़ा टाइम लगे, लेकिन जब आप बनेंगे तो एकदम परफेक्ट बनेंगे। फिर उसमें कम या ज़्यादा कुछ नहीं होगा, एकदम परफेक्ट होगा। तो इस तरह समाधान स्वरूप खुद भी बनें और औरों को भी बनायें और ये आपके रियल नेचर में शामिल हो जायेगा।



डॉ. कु. अनुज, दिल्ली

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दें



प्रश्न : मैं जबलपुर से प्रिया शर्मा हूँ। मैं जब कभी भी पूजा और साधना के लिए बैठती हूँ तो मुझे कोई आकृति दिखाई देती है। और मैं समझ नहीं पाती कि ये आकृति पॉजिटिव है या निगेटिव? इसे मैं कैसे समझूँ क्योंकि जब वो मेरे सामने आती है तो मेरी आँखें बंद हो जाती हैं। इसे कृपया स्पष्ट करें कि क्या है ये आकृतियाँ?

उत्तर : आजकल ये तंत्र-मंत्र का प्रयोग बहुत चल रहा है। बहुत आत्माएँ भटक रही हैं। बहुत लोग सुसाइड (जीवघात) कर रहे हैं। एक्सीडेंट्स बहुत हो रहे हैं। ये आत्माएँ भटक रही हैं। सूक्ष्म रूप लेकर सामने आ जाती हैं। आपको एक ही अभ्यास करना है जब भी आपको फीलिंग हो तो आप तुरंत ये अभ्यास करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। मैं सर्वशक्तिवान की संतान हूँ। ये सात बार याद करेंगी तो भय भी खत्म हो जायेगा और वो आकृति भी लोप हो जायेंगी।

प्रश्न : मैं इंदौर से योगिता हूँ। साक्षात्कार क्या है या ट्रांस की स्थिति क्या है?

उत्तर : जब हम ईश्वरीय मार्ग पर चलते हैं तो यहाँ तीन चीजें विशेष रूप से हैं एक है ज्ञान का अध्ययन। जिससे हमारी बुद्धि बहुत डिफाइन और रिफाइन होती जाती है। ज्ञान का मनन-चिंतन इसी के साथ दूसरी चीज होती है योगाभ्यास। जिसमें हम अपना नाता सर्वशक्तिवान से जोड़ते हैं। अपनी मन-बुद्धि की तरफ हम उससे जोड़ते हैं। और तीसरी चीज कुछ लोगों को ये डिवाइन इनसाइट (दिव्य बुद्धि) प्राप्त होती है। जिसे दिव्य दृष्टि का वरदान कहते हैं, इसे ध्यान कहते हैं। एक ध्यान वो है कि हम किसी केन्द्र पर, किसी देवी-देवता की मूर्ति पर, किसी ज्योति पर अपना ध्यान एकाग्र करें। वो ध्यान नहीं जैसे रामकृष्ण परमहंस के बारे में लोगों ने सुना होगा कि वो जब पाँच साल के थे और माताओं के साथ कहीं जा रहे थे। चलते-चलते बिल्कुल बेहोश जैसा हो गया। और मातायें समझती थी कि इसे क्या हो गया, नज़र लग गई, चक्कर आ गया क्या? लेकिन वो ध्यान में स्थित रहता था। तो ऐसा कोई विशेष व्यक्ति आया तो उसके चेहरे को देखा तो बोला कि न इसको चक्कर आया और न ही ये बेहोश हुए। ये तो किसी मग्न अवस्था में हैं। क्योंकि उनके चेहरे पर दिव्यता आ जाती थी। तो ये ध्यान अवस्था है। जिसमें हम यहाँ रहते हैं लेकिन हमारी आँखें बंद हो जाती हैं। हमारी कॉन्शियसनेस (चेतना) जो है वो लोप हो जाती

है। और उस सूक्ष्म लोक में पहुँच जाते हैं जो इन आँखों से नहीं देखा जा सकता। हम उसे ध्यान अवस्था में देखने लगते हैं। इसको ध्यान अवस्था कहते हैं। हमारे यहाँ ऐसे बहुत सारे भाई-बहनों को सिद्धि प्राप्त थी और जब हम यहाँ आये तो इसकी बहुत रिमझिम थी, धीरे-धीरे शिव बाबा ने इसको बंद किया कुछ समय के लिए और बंद इसलिए किया क्योंकि ये भटकती हुई आत्माएँ बीच में आकर इंटरफेयर (हस्तक्षेप) करने लगी। और बाबा ने जब ये देखा कि ये जा तो रहे हैं



कॉन्शियसली (सचेत) लेकिन इनको बीच में किसी ने रोक लिया है। वो इनमें प्रवेश भी कर सकती हैं तो फिर कष्ट हो जायेगा। ध्यान अवस्था बदनाम होगी इसलिए इसको स्टॉप कर दिया। लेकिन ये पार्ट फिर से प्रारम्भ होने का है। जब आत्माएँ बहुत स्ट्रॉन्ग हो जायेंगी और जब ये भटकती आत्माएँ उन पर अपना प्रभाव नहीं डाल पायेंगी तो इसको ध्यान अवस्था कहा जाता है। और कई सोचते हैं कि ध्यान अवस्था में आत्मा यहीं रहती है या ऊपर चली जाती है। तो बता दें कि आत्मा यहीं रहती है, अगर आत्मा शरीर छोड़ दे तो मृत्यु हो जाती है। लेकिन उसकी सम्पूर्ण चेतना यहाँ से अब्सेंट हो गई, और ऊपर जुड़ गई और उन्हें साक्षात्कार होने लगे।

ध्यान में जाने के लिए अलग से साधनाओं की जरूरत नहीं होती। ये पूर्व जन्मों की ही साधनाओं का परिणाम होता है कि उन्हें ट्रांस प्राप्त हो जाता है। अब रामकृष्ण परमहंस को ही ले लीजिए, बचपन से उन्होंने कहाँ साधनायें की, जितने भी महान पुरुष हुए हैं उन्हें ये गॉडली गिफ्ट के रूप में प्राप्त हो जाती है।

जब मनुष्य ध्यान में स्थित हुआ तो यहाँ अब्सेंट हुआ वो अभी ऊपर है। देखिए इसको समझने के लिए सिम्पल-सा एक उदाहरण है- एक होती है

साउण्ड स्लिप, गहरी नींद, दूसरी है कि हम नींद में स्वप्न देख रहे हैं। हम वहाँ गये, हम वहाँ गये, हम उससे मिले, हमने वहाँ ये किया। हम हैं तो वहीं अपने बैड पर ही। आत्मा निकल कर भी कहीं नहीं गई। लेकिन सब्कॉन्शियस माइंड में जो मेमोरी (स्मृति) भर ली थी वो दिखने लगी अब। उसका मूर्त रूप जैसे आ गया। साकार रूप दिखने लगा। ऐसे ही ध्यान और साक्षात्कार की बात है। जो इच्छा थी, जो देखना चाहते थे वो मूर्त रूप में दिखने लगता है।

प्रश्न : जब मीडिटेशन करते हैं तो ऐसा लगता है कि जैसे देह से अलग हो गया हूँ और ऊपर की ओर जा रहा हूँ। कई बार तो सुखद फीलिंग होती है और कई बार बहुत डर का अनुभव होने लगता है कि ये सब क्या हो रहा है! हम कैसे समझें कि ये ठीक अनुभव हो रहा है और कब समझें कि हमें इस अभ्यास को नहीं करना चाहिए।

उत्तर : अगर कोई दुःखद फीलिंग है और कोई भय है तो हमें इसे स्टॉप कर देना चाहिए। लेकिन अगर हम बहुत आनंदित उसमें हो रहे हैं तो ये सही है। उस चीज़ को हम कंटिन्यू (जारी) रख सकते हैं।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकिंग' चैनल



कम सोचें तो एनर्जी बचे...



हैं। क्योंकि मालिक बहुत शक्तिशाली होना चाहिए। हमें स्वयं को अपनी शक्तियों की याद दिलानी होगी। हे आत्मा! तुम बहुत शक्तिशाली हो। इस मन को कंट्रोल करना तुम्हारे बस की बात है। तुम ये न कहो कि मन रुकता नहीं, हमारे कंट्रोल में आता नहीं, तुम इसे रोक सकते हो।

मैं बता रहा था कि बातें बड़ी नहीं होती आप अपने पिछले पंद्रह दिन या एक महीने की बातों का विश्लेषण कर लें, विचार कर लें। जिन पर आपने बहुत सोच लिया है और जब वो बातें आपके सामने रियल रूप में आई होंगी तो आप शायद हँसे होंगे अपने आप पर कि हम ऐसे ही सोच रहे थे। बिना मतलब परेशान हो रहे थे। बात तो ये है ही नहीं। तो ये तो ज्यादा सोचने की मानसिकता हो गई। नेचर ऑफ माइंड, बना ली है। इससे बचें, इसे समाप्त करें और इससे बचने

ज्यादा सोचने के बारे में बाबा ने कहा बातें बड़ी नहीं होती तुम सोच-सोच कर उनको बड़ा कर देते हो। इस पर गहन चिंतन करना है सबको।

हमारा जीवन बहुत मूल्यवान है। इसमें ज्यादा सोचने की आदत जीवन के सुखों को नष्ट कर देती है। हमें जो ज्यादा सोचने की आदत है उसको खत्म करना है। सोच, हमारे थॉट्स, हमारे विचार, हमारे संकल्प हमारे कंट्रोल में हो जायें, हो जायेंगे। बाबा की दो चीजें आपको याद दिला देते हैं, जब हम बाबा शब्द बोलेंगे तो सभी जान लें शिव बाबा जो सुप्रीम सॉल है, जो सुप्रीम टीचर बनकर इस संसार में आये हैं, उन्होंने हमें पढ़ाया है। उन्होंने हमें ये सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का गहरा ज्ञान दिया है। जो मनुष्य को परफेक्शन की ओर ले जा रहे हैं उनके अन्दर छुपे हुए देवत्व को जगा रहे हैं। ये सब बातें उनके द्वारा दिए गए ज्ञान से ही प्राप्त हुई हैं। ज्यादा सोचने के बारे में बाबा ने कहा बातें बड़ी नहीं होती तुम सोच-सोच कर उनको बड़ा कर देते हो। इस पर गहन चिंतन करना है सबको।

दूसरी बात तुम मन के मालिक हो, मन तुम्हारा है। इसका अर्थ ये नहीं कि मन तुम्हारा है, मन आत्मा की ही शक्ति है जैसे हमारा हाथ, ये शरीर की ही शक्ति है। अब हम ये तो नहीं कहेंगे कि हाथ शरीर से अलग है। हम इसको जैसा ऑर्डर दें ऊपर करें, इधर-उधर करें, शांत बैठ जायें ये आज्ञा का पालन करता है। ऐसे मन भी हमारा है। ये मैं इसलिए भी कह रहा हूँ क्योंकि इंडियन फिलॉसफी में, मनोविज्ञान में, संसार की वास्तव में सभी फिलॉसफी में मन-बुद्धि को अलग मान लिया गया। उनको सूक्ष्म शरीर के हिस्से मान लिया गया और आत्मा अलग एक शक्ति है, ऐसा नहीं। हम आत्माओं की मन-बुद्धि-संस्कार तीन ये सूक्ष्म शक्तियाँ हैं, तो ये हमारी हैं। मन और बुद्धि हमारी हैं, हमारा इन पर सम्पूर्ण अधिकार है। हम इनके मालिक हैं इस मालिकपन को सभी समझ लें और स्वीकार कर लें। और अपने को रोज, कम से कम 21 दिन और किसी की स्थिति ज्यादा गिरावट में आ गई है तो और 21 दिन अभ्यास करेंगे कि मैं आत्मा मन की मालिक हूँ। इतना ही कर लेंगे और अच्छा करना चाहें मैं आत्मा स्वराज्यधिकारी हूँ। मैं मास्टर सर्वशक्तिकान

का तरीका होगा ज्ञान का चिंतन, स्वमान की प्रैक्टिस इन दोनों का सार एक ही है कि हम अपने मन को कुछ सुन्दर विचार देते रहें। हमारे जो ज्ञान के विचार हैं, स्वमान के विचार हैं वे बहुत शक्तिशाली हैं। एक-एक वो श्रेष्ठ संकल्प हजारों व्यर्थ संकल्पों को काटने में सक्षम है। जैसे महाभारत और रामायण में भी था ना कि एक ही बाण छोड़ा सारे बाण नष्ट हो गये। हमारे पास ये ज्ञान के, स्वमान के बहुत अच्छे तीर हैं, बाण हैं इनको चलाना सीख लें।

एक उदाहरण ले लेते हैं, किसी ने आपकी निंदा कर दी। अब निंदा एक ऐसी घटना, एक ऐसी चीज है जिसको संसार में कोई भी सुनना नहीं चाहता। उसने आपके लिए दो-चार निंदक बोल बोल दिए। आपकी सोच प्रारम्भ हो गयी। वो तो बोल कर चला गया, वो बहुत खुश है कि मैं बोल आया हूँ कुछ उसको और भूल गया कि वो क्या बोल कर आया। और हम इधर बार-बार याद कर रहे कि अच्छा उसने ऐसा कहा, हमारी

खुशी चली गई, हम उदास हो गये। उस व्यक्ति के प्रति निगेटिव फीलिंग हो गई, ये मेरा शत्रु है, ये मुझे आगे बढ़ने नहीं देना चाहता। ये मेरी प्रशंसा सुनकर खुश नहीं होता। ये मेरी बात न जाने कहाँ-कहाँ फैलायेगा। ये सौ लोगों को बतायेगा। वो लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे। हमारा सोच चालू हो गया। और वो चिंतन सारा दिन चल रहा है। काम कर रहे हैं सोच वो रहे हैं, भोजन खा रहे हैं, बना रहे हैं और सोच वो रहे हैं। अब हम इससे कैसे बचेंगे? हमें ईश्वरीय महावाक्य याद कर लेने चाहिए। अच्छा ज्ञानी वही है जो निंदा-स्तुति, हार-जीत, मान-अपमान में समान रहे। ठीक है उसने निंदा की। कबीर जी ने भी तो कहा कि निंदक नियरे राखिए। निंदक को अपने आप रखिए वो तो आपको धो-धो कर साफ करता रहेगा। रियलाइज कर लें वो निंदा कर रहा है हमसे कुछ गलती तो नहीं हुई है! अगर गलती हुई है तो एक अच्छा पुरुषार्थी अपनी गलती को ठीक करेगा, और निंदक को धन्यवाद देगा कि तुमने मेरी गलती रियलाइज करायी।

मान लो आपकी गलती है नहीं, आप बहुत अच्छा काम करके आये थे। आपने बहुत अच्छी सेवा की थी, उस व्यक्ति को सहन नहीं हुआ वो आपको आगे बढ़ता खुश नहीं हुआ इसलिए उसने आपके बारे में उल्टी-उल्टी बातें कर दी। आपको अपनी मानसिकता को ऐसा बना लेना चाहिए कि इन चीजों की हम परवाह नहीं करते। जिसको भगवान आगे बढ़ा रहा हो उसको कोई मनुष्य नहीं रोक सकेगा। ऐसी एक दृढ़ता, बुद्धि की विशालता, विचारों की विशालता आप अपने अन्दर धारण कर लें। मेरे साथ तो स्वयं भगवान हैं। मुझे आगे बढ़ाने वाला वो है। जिसको भगवान आगे लेकर जा रहा हो उसको मनुष्य क्या रोकेगा, गीत गा लिया करो। जिसका साथी हो भगवान उसको क्या रोकेगा आंधी और तूफान। तो इस विचार से संकल्प शांत हो जायेंगे। तो ज्ञान का स्तर है प्रयोग करेंगे।

ज्यादा तो मनुष्य जहाँ-तहाँ सोचता है हम कई बातों को लेते हैं- उसकी हार हो जाये, वो बार-बार प्रयास के बाद असफल होता रहे, लोग उसे साथ न दें, अपने धोखा दें, कभी-कभी भाग्य साथ न दे तो मनुष्य बहुत सोचने लगता है। लेकिन याद रखना जितना हम कम सोचेंगे हमारी एनर्जी बचेगी और हमें सहज सफलता प्राप्त होगी। जितना हम कम सोचेंगे उतना हमारे चेहरे पर ग्लो रहेगा, तेज रहेगा और हम बाबा का नाम रोशन कर सकेंगे।



नई दिल्ली। यूनियन मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर कल्चर, पार्लियामेंट्री अफेयर्स अर्जुन राम मेघवाल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. शिविका बहन, माउण्ट आबू, ब्रह्माकुमारीज के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. प्रकाश भाई, माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. विजय दीदी, पांडव भवन, नई दिल्ली।



जूनागढ़-गुज। पुलिस तालीम महाविद्यालय में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित अलौकिक रक्षाबंधन कार्यक्रम में डीआईजी बी.आर. पांडोर, डीवायएसपी एस.एन. गोहिल, वाइस प्रिंसिपल जी.एल. चौधरी सहित 250 पुलिस कर्मी भाइयों एवं बहनों को ब्र.कु. शिला बहन एवं ब्र.कु. कोमल बहन ने रक्षासूत्र बांधा। इस मौके पर ब्र.कु. अजीत भाई सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



रीवा-म.प्र। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर आयोजित 'मेरी संस्कृति मेरी पहचान' कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, रीवा क्षेत्र के नशा मुक्ति अभियान के नोडल निवेशक राजयोगी ब्र.कु. प्रकाश भाई, ब्र.कु. नम्रता बहन, ब्र.कु. प्रमोद भाई, सी.पी. मालवीय, प्रो. उषा किरण भटनागर, ब्र.कु. विंदु बहन सहित बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के सिविल लाइन सेवाकेन्द्र द्वारा 'कल्प तरु' अभियान के अंतर्गत ग्राम देवरी में शाश्वत यौगिक खेती परियोजना के उद्घाटन अवसर पर ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. विनीता बहन, कृषक रामनारायण बानी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



विदिशा-बालाजीपुरम(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा गायत्री मंदिर में आयोजित 'प्राकृतिक चिकित्सा शिविर' में अहमदाबाद से आई श्रीमति धरती ठक्कर, स्थानीय सेवाकेन्द्र से ब्र.कु. सपना बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



गोटगांव-म.प्र। नगर के नवनिर्वाचित पार्षदों का शॉल श्रीफल व ईश्वरीय सौगात भेंट कर ब्र.कु. भावना बहन द्वारा सम्मान किया गया। इस मौके पर पार्षद पूजा राजपूत, पार्षद संगीता अग्रवाल, पार्षद जितेंद्र चौबे, पार्षद पुरोहित सहित अन्य पार्षदगण उपस्थित रहे।



हैदराबाद-तेलंगाना। ब्रह्माकुमारीज के एडमिनिस्ट्रेटर्स विंग द्वारा शांति सरोवर के ग्लोबल पीस ऑडिटोरियम में 'इन्हेंसिंग इफेक्टिवनेस' विषय पर कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। साथ ही इसी विषय पर राज्य स्तरीय अभियान का भी शुभारंभ किया गया। इस मौके पर जस्टिस उज्ज्वल भुइयाँ, चीफ जस्टिस ऑफ हाई कोर्ट ऑफ तेलंगाना, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, चेयरपर्सन ऑफ एडमिनिस्ट्रेटर्स विंग, ब्रह्माकुमारीज, राजयोगिनी ब्र.कु. कुलदीप दीदी, डायरेक्टर, ब्रह्माकुमारीज हैदराबाद, जस्टिस सुधीर जी, जज, हाई कोर्ट ऑफ तेलंगाना, रौनक यर खान, ग्रेट ग्रैंडसन ऑफ सिक्स्थ निजाम, राजेन्द्र रेड्डी, सीनियर एडवोकेट एवं पूर्व प्रेसिडेंट ऑफ बार काउंसिल ऑफ इंडिया सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



बीदर-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज के 'दया और करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' वार्षिक थीम के अंतर्गत बीवीबी कॉलेज में कल्प तरु प्रोजेक्ट के तहत वृक्षारोपण एवं रक्षाबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. पार्वती बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनों द्वारा कॉलेज के स्टाफ तथा विद्यार्थियों को रक्षासूत्र बांधा गया। साथ ही कल्प तरु प्रोजेक्ट के तहत 40 पौधे लगाये गये।



गांधीनगर से.28-गुज। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कैलाश दीदी को गुरु मानते हुए उनसे आशीर्वाद लेने हेतु गांधीनगर महानगरपालिका की पूर्व कॉर्पोरेटर एवं प्रखर समाज सेविका हर्षाबा धांधल की अगुवाई में हाउसी, फन एवं गेम्स की आशय बनी 'गोल्डन विम्स लेडीज क्लब' की ग्रैंड ओपनिंग रखी गई। इस मौके पर हिना गौतम सहित बड़ी संख्या में भाई-बहनें उपस्थित रहे।



धडगांव-महा। कांग्रेस नेता हरसिंह दादा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरिता बहन।

कार्यक्रम : ब्रह्माकुमारीज के युवा प्रभाग की ओर से 'स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना' आध्यात्मिक युवा संसद में पहुंचे देशभर से युवा

अपनी सकारात्मक ऊर्जा से विश्व को नई दिशा दें युवा : दादी

शांतिवन-आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज के युवा प्रभाग द्वारा मनमोहिनी वन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में आयोजित पाँच दिवसीय 'स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना' आध्यात्मिक युवा संसद में देशभर से अलग-अलग क्षेत्रों के 500 से अधिक उच्च शिक्षित प्रोफेशनल युवक-युवतियां भाग लेने पहुंचे। सबसे खास बात ये रही कि इस युवा संसद की कार्यवाही पूरी तरह से लोकसभा की तर्ज पर की गई। इसमें लोकसभा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कमेटी मेम्बर, मंत्री आदि बनाकर सम्बंधित विषय पर पक्ष-विपक्ष की भूमिका में युवाओं ने अपने विचार रखे।

संसद के शुभारंभ सत्र में ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका और युवा प्रभाग की अध्यक्षा दादी रतनमोहिनी ने कहा कि युवा ही देश के कर्णधार हैं। युवा शक्ति और ऊर्जा का केंद्र होते हैं। आप अपनी सकारात्मक ऊर्जा से विश्व को नई दिशा दे सकते हैं। आप सभी अपने जीवन में खूब तरक्की करें यही शुभकामना है।



लोकसभा की तर्ज पर आध्यात्मिक युवा संसद का संदेश खुद को लकी, यूनिक्स पर्सनालिटी और गेट मानो

सांसद, मंत्री से लेकर लोकसभा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कमेटी मेम्बर बनकर युवा ले रहे भाग

युवा प्रभाग की उपाध्यक्षा ब्र.कु. चंद्रिका दीदी ने युवाओं का आह्वान किया कि तीन संकल्प आपके जीवन को सफलता के शिखर पर ले जाएंगे। पहला, मैं लक्की हूँ। दूसरा, मैं यूनिक्स पर्सनालिटी हूँ। तीसरा, मैं गेट हूँ। इन संकल्पों को अपने मन-मस्तिष्क में बिठा लें और इनका स्वरूप बन जाएं तो

फिर आपको सफलता का वरन करने से कोई रोक नहीं सकता है। उन्होंने कहा कि समय, संकल्प, श्वास और सम्बंध को यूज करना सीख लिया तो लाइफ में सबकुछ संभव है। युवा प्रभाग की नेशनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. कृति बहन ने शब्दों से सभी का स्वागत किया। दिल्ली से

आएविश्व युवा केन्द्र के संस्थापक और समन्वयक उदय शंकर सिंह ने कहा कि यहां सद्भाव और अध्यात्म की त्रिवेणी बह रही है। यहां आपको जो ज्ञान रूपी मोती मिलेंगे, उन्हें संजोकर रखें। इन महान बातों को व्यवहार में उतारना जरूरी है। जीवन का मर्म सिर्फ यहीं से मिल सकता है। विश्व

विद्यालय बहुत होंगे, लेकिन पूरे भूलोक में ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक ही है। प्रसिद्ध टीवी एक्टर अभिनंदन जिंदल ने कहा कि जब आप अकेले में होते हैं वही आपकी असली आरजू, चाहत होती है। असली हीरो तो ब्रह्माकुमार भाई-बहनें हैं। आप लोगों को देखने में लगता है कि हम लोग हीरो हैं लेकिन वास्तविक जिंदगी में यहां तक पहुंचने के लिए तमाम विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। संस्थान के अति. महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई भी मौके पर उपस्थित रहे। युवा प्रभाग के वरिष्ठ सदस्य ब्र.कु. जीतू ने संसद की कार्यवाही की रूपरेखा प्रस्तुत की। लखनऊ से हिंदू युवा वाहिनी के संस्थापक अतुल मिश्रा भी संसद में भाग लेने विशेष रूप से पहुंचे। स्वागत गीत मधुरवाणी ग्रुप के ब्र.कु. सतीश भाई व उनकी टीम ने प्रस्तुत किया। संचालन भीनमाल की ब्र.कु. गीता बहन व आभार युवा प्रभाग पंजाब जोन के क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. अरुण भाई ने किया।

कोरोना वॉरियर डॉक्टर्स व हेल्थ वर्कर्स को किया सम्मानित



सहस्वा-बिहार। ब्रह्माकुमारीज के शान्ति अनुभूति भवन सेवाकेन्द्र में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन एवं सिविल सर्जन के सहयोग से कोरोना वॉरियर डॉक्टर्स एवं हेल्थ वर्कर्स के सम्मान में विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के सेक्रेटरी डॉ. बनारसी लाल शाह, सिविल सर्जन डॉ. किशोर कुमार, आई.एम.ए. प्रेसिडेंट डॉ. ए.के. मिश्रा, सेक्रेटरी ओ.पी. यादव आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डॉ. बनारसी लाल शाह ने कहा कि डॉक्टर्स और स्वास्थ्य कर्मियों ने अपनी जान जोखिम में डालकर कोरोना काल में एक-एक जीवन बचाने के लिए बहुत तपस्या की। उनका जितना अभिनंदन व सम्मान करें उतना ही कम है। तत्पश्चात् उन्होंने सभी डॉक्टर्स एवं स्वास्थ्य कर्मियों को शॉल ओढ़ाकर, मेडल पहनाकर व सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए ब्र.कु. स्नेहा बहन ने कहा कि डॉक्टर्स और उनसे सम्बंधित सभी सेवा साथी समाज के लिए नेक्स्ट टू गॉड हैं। इस मौके पर ब्र.कु. कंचन बहन सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

सुरक्षित एवं टिकाऊ भविष्य के लिए विज्ञान एवं अध्यात्म

छतरपुर में हुआ साइंटिस्ट्स और इंजीनियर्स के लिए आध्यात्मिक सम्मेलन

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। सुरक्षित एवं टिकाऊ भविष्य के लिए विज्ञान, तकनीकी एवं अध्यात्म के संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है। महान वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने कहा है कि विज्ञान अध्यात्म के बिना अंधा है और अध्यात्म विज्ञान के बिना लंगड़ा है। यह दोनों आपस में मिलकर ही एक सुरक्षित टिकाऊ भविष्य हमें दे सकते हैं। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज के साइंटिस्ट्स एंड इंजीनियर्स विंग द्वारा 'सुरक्षित एवं टिकाऊ भविष्य के लिए विज्ञान तकनीकी एवं अध्यात्म' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में पानीपत से आये हरियाणा सरकार द्वारा सम्मानित एवं ब्रह्माकुमारीज साइंटिस्ट्स एंड इंजीनियर्स विंग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. भारत भूषण भाई ने व्यक्त किये। रिटा. प्राचार्य शासकीय महाराजा महाविद्यालय जी.पी. राजौरा ने मानव संस्कृति, मानव सभ्यता के कल्याण के लिए कैसे साइंस टेक्नोलॉजी और स्पीरिचुअलिटी को जोड़कर एक ऐसा रास्ता तैयार किया जाये जिसमें हमारी आने वाली पीढ़ी, हमारा भविष्य अच्छी

तरह सुरक्षित हो जाए इस बात पर प्रकाश डाला। परीक्षा नियंत्रक महाराजा बुंदेलखंड विश्वविद्यालय पी.के. पटैरिया ने कहा कि सब प्रदूषण में सबसे बड़ा प्रदूषण है दिमाग का प्रदूषण। जो आता है केवल एक 'ईगो' शब्द से। अगर हम अपने अहंकार को दिमाग से निकाल दें तो किसी

जिससे भविष्य में होने वाली समस्याओं से राहत मिल सके। छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर बीएसएनएल टीडीएम एस.डी. प्रजापति, प्रभारी स्टूडेंट्स वेलफेयर एम.सी.बी.यू. प्रो. डॉ. आर.के. पांडे, हेड ऑफ द कॉमर्स



का किसी से युद्ध न हो और शांति स्थापित हो जाए। अधीक्षण यंत्री एमपीईबी राम पांडे ने सभी को सोलर पैनल प्लांट के बारे में जानकारी देते हुए सभी से आग्रह किया कि आप लोग भी सोलर प्लांट को जानें समझें और उसका उपयोग करें

डिपार्टमेंट एम.सी.बी.यू. प्रो. डॉ. ओ.पी. अरजरीया, यूजीसी प्रभारी एम.सी.बी.यू. प्रो. डॉ. पी.के.जैन, हेड ऑफ द दर्शन शास्त्र एम.सी.बी.यू. प्रो. जे.पी. शाक्य सहित सभी विभागों के इंजीनियर व बीएसएनएल के अधिकारीगण मौजूद रहे।

आध्यात्मिकता के ज़रिए नए बदलाव कर रही ब्रह्माकुमारी संस्था

'दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' में विभिन्न सामाजिक सेवा संगठन

जम्मू-ब्रह्माकुमारीज रोड 248 ए। ब्रह्माकुमारीज के सामाजिक सेवा प्रभाग एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र द्वारा 'दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' वार्षिक थीम पर आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न सामाजिक सेवा संगठनों ने भाग लिया।

इस अवसर पर संजीव सोनी, अध्यक्ष, लायंस क्लब जम्मू ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था समाज की निःस्वार्थ सेवा कर रही है। अगर सभी समाज सेवा संगठन एक साथ आएँ और एक दूसरे के साथ काम करें तो हम निश्चित रूप से दुनिया में सकारात्मक बदलाव ला पाएंगे।



श्रीमति पूनम खन्ना, राष्ट्रीय अध्यक्षा, महिला मोर्चा लोक रक्षक संगठन ने कहा कि यदि हम सामाजिक सेवा करना चाहते हैं तो हमारे पास दया और करुणा, ये दो

गुण होने चाहिए और ये आध्यात्मिकता के माध्यम से ही विकसित हो सकते हैं। अशोक वर्मा, अध्यक्ष, न्यू यंग ब्लड ऑर्गनाइजेशन ने बताया कि ब्रह्माकुमारी संगठन

हर क्षेत्र में अपनी सेवाएं देकर समाज में एक नया बदलाव लाने का प्रयास कर रहा है और उनकी सेवाएं काबिले तारीफ है। चैयरमैन राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन दीदी, उत्तरी क्षेत्र कोऑर्डिनेटर स्पोर्ट्स विंग ब्रह्माकुमारीज एवं संचालिका ब्रह्माकुमारीज जेके/लदाख ने सभी को शुभ प्रेरणा दी और राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. रविंदर भाई ने कहा कि समाज के गरीब तबके के उत्थान में सामाजिक कार्यकर्ता अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। उक्त कार्यक्रम में सतपाल शर्मा, सचिव रेड क्रॉस जम्मू, श्रीमति मीतू राजपूत, सामाजिक कार्यकर्ता, तरुण शर्मा, एक ज़रिया एनजीओ, नीरज टंडन, सदस्य, लायंस क्लब व अशोक वर्मा आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे व अपने-अपने विचार सभी के साथ साझा किए।